हँसती दुनिया

`10/-

वर्ष 41 • अंक 7 • अक्टूबर 2014

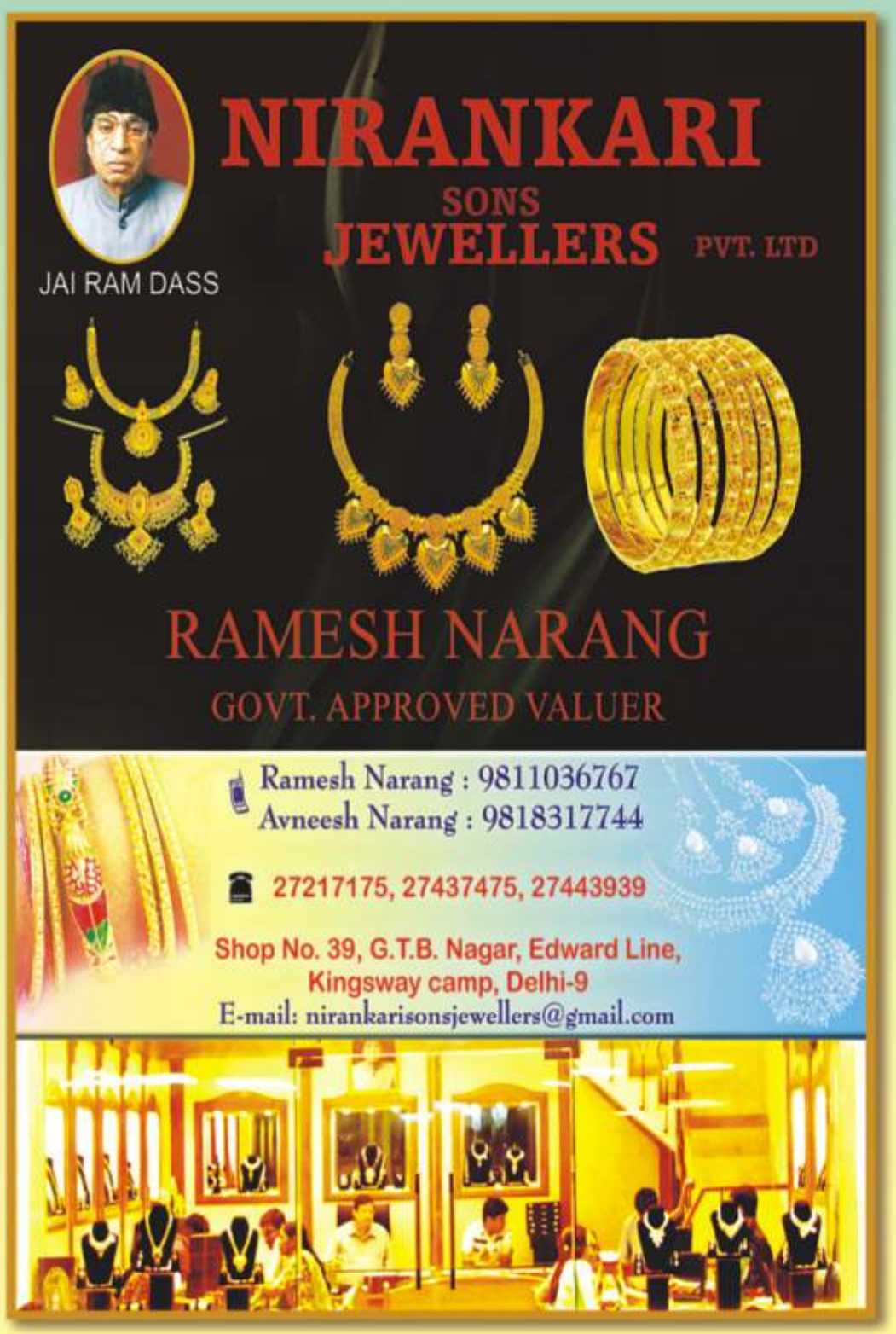
NIRANKARI
SONS
JEWELLERS PVT. LTD
JAI RAM DASS
RAMESH NARANG
GOVT. APPROVED VALUER
Ramesh Narang : 9811036767
Avneesh Narang : 9818317744
27217175, 27437475, 27443939
Shop No. 39, G.T.B. Nagar, Edward Line,
Kingsway camp, Delhi-9
E-mail: nirankarisonsjewellers@gmail.com

वर्ष 41 अंक 10

हँसती दुनिया

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

अक्टूबर 2014

स्तम्भ

सबसे पहले	4
अनमोल वचन	5
वर्ग पहेली	10
जन्म दिन मुबारक	12
समाचार	18
भैया से पूछो	33
पढ़ो और हँसो	46
रंग भरो परिणाम	48
आपके पत्र मिले	64

चित्रकथा

फोटो फीचर	56–57

सम्पादक
विमलेश आहूजा
सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

कार्यालय फोन :
011-47660200
Fax : 011-27608215
E-mail:
editorial@nirankari.org

कहानियां

धर्म की बात	डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी 7
अनोखी तरकीब का कमाल	अर्चना सोगानी 9
चींटी ने मसला रावण	डॉ. सेवा नन्दवाल 14
चन्दनवन की दीवाली	चित्रेश 19
निराली भूख	दिनेश दर्पण 27
जब बन्दर बना जंगल का राजा	ओमदत्त जोशी 35
गाँधी जी के तीन बन्दर	विद्या प्रकाश 42
बालवन में दीपावली	डॉ. सेवा नन्दवाल 52
महान कौन?	महेन्द्र सिंह शेखावत 55
मित्र की पहचान	दर्शन सिंह आशट 59

कविताएं

आया दशहरा	शोभा शर्मा 6
दीवाली त्यौहार	महेन्द्र कुमार वर्मा 11
मेरी माँ	गोविन्द भारद्वाज 23
खरगोश, साही	अंकुश्री 32
दीपों का त्यौहार	राजेन्द्र निशेश 51
कार	दिनेश राय 54
दीपक हूँ मैं	महेन्द्र सिंह शेखावत 55
कहानी	डॉ. तारा निगम 58

विशेष/लेख

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी	विकास अरोड़ा 22
पहेलियां	राधा नाचीज़ 24
आकर्षक पक्षी हुदहुद	उमेश प्रसाद 25
जंगल के पशु–पक्षी भी...	कमल सौगानी 30
विचित्र पौधा	मिताली 40
कहानी आग और तिली की	चाँद मोहम्मद घोसी 43

COUNTRY	ANNUAL	3 YEARS	6 YEARS	10 YEARS	LM (20YEARS)
INDIA/NEPAL	Rs. 100	Rs. 250		Rs. 600	Rs. 1000
UK	£ 12	—	£ 60	£ 100	£ 150
EUROPE	€ 15	—	€ 75	€ 125	€ 200
USA	$ 20	—	$ 100	$ 150	$ 250
CANADA/AUSTRALIA	$ 25	—	$ 125	$ 200	$ 300

OTHER COUNTRIES # Equillant to U.S. Dollars as mentioned above

प्रकाशक एवं मुद्रक सी. एल. गुलाटी, सम्पादक विमलेश आहूजा ने सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9 के लिये, हरदेव प्रिंटर्ज, निरंकारी कालोनी, दिल्ली –9 से मुद्रित करवाया।

सबसे पहले

आओ सोच बदलें!

किसी शायर ने कभी लिखा था –

बुरी है बुराई मेरे दोस्तो, बुरा मत कहो,
बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो।

ये पंक्तियां आज भी इसी तरह अलग–अलग हालात में इस्तेमाल की जाती हैं। ये पंक्तियां सबको ही अच्छी लगती हैं चाहे वह व्यक्ति स्वयं अच्छा कर रहा है या बुरा। कहने के लिए, दोहराने के लिए, किसी को समझाने के लिए ही ये पंक्तियां बनी हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जिनकी जयंती 2 अक्तूबर को हर साल मनाई जाती है। उन्होंने भी तीन बन्दर प्रतीक रूप में हमारे सामने रखे थे। एक बन्दर ने दोनों हाथों से मुंह को बन्द किया हुआ है, दूसरे बन्दर ने दोनों हाथों से कानों को बन्द किया हुआ है और तीसरे ने आंखों को बन्द किया हुआ है। ये प्रतीक भी इस ओर इशारा करते हैं कि हमें बुरा नहीं कहना, बुरा नहीं सुनना और बुरा नहीं देखना।

यहाँ बात विचारने योग्य यह है कि जितनी बार भी हम बुरा और बुराई के बारे में बात करेंगे उतनी बार ही हम बुराई की ओर गौर अवश्य करेंगे, और यही बुराई और बुरी बातें हमारे ज़ेहन में बैठती चली जाएगी और कहीं न कहीं, कभी न कभी वह हमारे में भी प्रवेश करने का कारण बन सकती हैं। इससे अच्छा है कि हम बात करते समय केवल अच्छी और सकारात्मक बातों का जिक्र करें जिससे वे अच्छी बातें हमारे लिए और बाकी सबके लिए भी सदुपयोगी हो सकती हैं।

गुलाब जामुन का जिक्र आते ही जुबान मीठी हो या न हो मुंह में पानी अवश्य आ जाता है और यही गुण अच्छे व्यक्ति के जिक्र से भी होता है। उस व्यक्ति के गुण सामने आ जाते हैं। इसलिए हमें अपने सोचने–विचारने के ढंग में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

आज से हम केवल इस तरह सोचें एवं प्रयत्नशील रहें कि अच्छी है अच्छाई मेरे साथियो! मीठा एवं मधुर बोलें, दृष्टि में सबको समान समझें और किसी को सुनें तो मधुर वचन ही सुनें, और उनमें सकारात्मक बात को ही खोजें। इतनी सी सजगता रखने से हमारा जीवन सहज में ही सरल एवं आनन्दमय हो जाएगा।

– विमलेश आहूजा

– संग्रहकर्ता :
प्रियंका चोटिया 'आंचल'

अनमोल वचन

★ जीवन के विकास के लिए अभिमान का त्याग परम आवश्यक है। अभिमान से घृणा का जन्म होता है, प्यार का अन्त होता है।
– बाबा हरदेव सिंह जी महाराज

★ जीवन का एक पल करोड़ों स्वर्ण मुद्राओं के देने पर भी नहीं मिलता है। – चाणक्य

★ कुछ नहीं करोगे तो कुछ नहीं बनोगे। – होब

★ आत्म–त्याग से आप दूसरों को निःसंकोच त्याग करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। – बनार्ड शा

★ जिनमें उत्साह नहीं है, वे केवल काठ के पुतले हैं।
– संत तिरुवल्लुवर

★ किसी की मेहरबानी मांगना अपनी आजादी बेचना है।
– महात्मा गाँधी

★ कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में नहीं।
– श्रीमद्भगवद्गीता

★ मानव का सच्चा जीवन–साथी विद्या ही है, जिसके कारण वह विद्वान कहलाता है। – दयानन्द सरस्वती

★ अच्छा स्वभाव और अच्छी समझ जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान हैं।

★ यह जरूरी नहीं कि हर अच्छी चीज अच्छी जगह ही मिले।

★ जो दूसरे की सुख–सम्पति देखकर प्रसन्न होता है, वह भाग्यवान पुरुष है। – अज्ञात

★ जिसके मन में संतोष है, उसके लिए हर जगह संपन्नता है।
– संस्कृत लोकोक्ति

बाल गीत : शोभा शर्मा

आया दशहरा

विजय सत्य की हुई हमेशा
हारी सदा बुराई है।
आया पर्व दशहरा कहता
करना सदा भलाई है।।

रावण था दम्भी अभिमानी
उसने छल–बल दिखलाया।
बीस भुजा दस सीस कटाए
अपना कुनबा मरवाया।।

अपनी ही करनी से लंका
सोने की जलवाई है।

मन में कोई कहीं बुराई
रावण जैसी नही पले।
और अंधेरी वाली चादर
उजियारे को नहीं छले।

जिसने भी अभिमान किया है
उसने मुंह की खाई है।

आज सभी की यही सोच हो
मेल–जोल खुशहाली हो।
अंधकार मिट जाए सारा
घर–घर में दीवाली हो।।

मिली बड़ाई सदा उसी को
जिसने की अच्छाई है।

धर्म की बात

उस दिन युद्ध करते–करते कर्ण का रथ कीचड़ में फँस गया। घोड़े रथ को आगे न बढ़ा सके। कर्ण ने अपने बल से रथ को कीचड़ से निकालने की इच्छा प्रकट की और अर्जुन से कहा, ''हे अर्जुन! थोड़ी देर प्रतीक्षा करो। युद्ध को बन्द करो, जब तक कि मैं रथ के पहिए को कीचड़ से निकाल न लूँ। वीर पुरुष ऐसा ही किया करते हैं। अर्जुन! तू युद्ध करने में श्रेष्ठ है। तुझसे मैं श्रेष्ठ कर्म की आशा करता हूँ। तू लोक में शूर है, सदाचारी है, युद्ध के धर्म और मर्म को जानता है। इसलिए धर्म का पालन करते हुए कुछ देर ठहर जा।''

कथा महाभारत से : डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

वीरवर अर्जुन ने बाण रोक लिया। धनुष को विश्राम दिया। सारथि कृष्ण ने देखा कि युद्धरत अर्जुन पथभ्रष्ट हो रहा है। यह शत्रु कर्ण की बातों में फंस गया है। उन्होंने कर्ण को सम्बोधित करते हुए कहा, ''अरे कर्ण! भला हो तेरा, कि तुम्हें धर्म याद आ गया। नीच पुरुष जब अपने पाप का फल पाने लगता है, तो फिर इसी तरह दुहाई देते हैं। उन्हें अपना पाप दिखाई नहीं देता। ओ कर्ण! जब एक वस्त्र में द्रौपदी को राजसभा में लाया गया था, तब तुम्हें धर्म अच्छा क्यों नहीं लगा? जब युधिष्ठिर को छल से जीता गया, जब तुम्हारा धर्म कहाँ गया था? लाक्षागृह में पाण्डवों को जीवित जलाने का जब प्रयास किया गया, तब धर्म की दुहाई देते? जब पाण्डवों ने वनवास भी गुजार लिया, अज्ञातवास भी पूरा कर लिया तब उनको उनका अधिकार देने के लिए तुम्हारा धर्म कहाँ था? जब द्रौपदी को तुमने कहा था कि ये पाण्डु पुत्र तो अब मृत्यु को गए तू किसी और को पति कर ले, कर्ण! तब धर्म का विचार क्यों नहीं किया? जब बालक अभिमन्यु को सबने मिलकर धोखे से युद्ध में मारा तब तुम्हारा धर्म कहाँ चला गया था? यदि इन सभी बातों में तेरा धर्म नहीं था तो आज धर्म की दुहाई देकर क्यों तालु को सुखा रहे हो? आज कितनी ही धर्म की दुहाई दो लेकिन जीवित न बच पाओगे।''

सारथी कृष्ण की बात युक्तिसंगत थी, वह तुरन्त काम कर गई अर्जुन ने एक ही क्षण में धर्म के लक्षण को समझकर कर्ण का सिर उड़ा दिया।

''जो मनुष्य जैसा व्यवहार करता है, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना उचित है। कपटी को कपट से मारना ही धर्म है और सज्जन से सज्जनता का व्यवहार करना चाहिए।''

सारथी बने श्रीकृष्ण ने युद्धरत अर्जुन को विषमताओं से निकालते हुए युद्ध के विजय मार्ग पर प्रशस्त किया। इसी प्रकार बुद्धि रूपी सारथी मन और इन्द्रियों को अपने अधीन करते हुए आत्मा को अपने लक्ष्य पर पहुँचा देता है।

• • •

रोचक कहानी : अर्चना सोगानी

अनोखी तरकीब का कमाल

एक था राजा। बड़ा ही सनकी। वह अक्सर अपने पड़ोसी राजाओं के पास तरह–तरह की धमकियां भेजा करता। कई बार तो वह उल्टे–सीधे प्रश्न भी पूछा करता जिनका जवाब धमकी पाने वाले राजा को भेजना पड़ता था।

ऐसे ही एक बार उसने रूपा नगरी के राजा के यहाँ एक सफेद बिल्ली भेजी और कहा कि इसे अच्छे से अच्छा स्वास्थ्यवर्धक भोजन दिया जाये, लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि दो महीने के अन्दर इसका एक रत्ती भी वजन न बढ़े। यदि वजन बढ़ गया तो रूपा नगरी पर हमला बोल कर सब कुछ लूट लिया जायेगा।

रूपा नगरी के राजा ने यह अजीब समस्या अपने दरबार में रखी और इसका हल बतलाने को कहा।

मुख्यमंत्री ने कहा– महाराज। एक अनोखी तरकीब है जिसके माध्यम से बिल्ली का वजन एक रत्ती भी नहीं बढ़ेगा।

''भला वह कौन–सी तरकीब है'', राजा ने पूछा।

मुख्यमंत्री ने बताया– बिल्ली को बांधकर रखा जाये। उसके दोनों और दो कुत्ते भी बांध दिये जायें, लेकिन कुत्ते इतनी दूर पर रहें कि वे बिल्ली को चीर–फाड़ न सकें।

जैसे मुख्यमंत्री ने कहा, राजा ने वैसा ही किया। ठीक दो माह उपरांत उस बिल्ली को वापस, सनकी राजा का राजदूत ले गया।

सनकी राजा ने बिल्ली को तोलने पर देखा कि उसका वजन एक रत्ती भी न बढ़ा था।

बात यह थी कि बिल्ली को अच्छे खाने के साथ–साथ रात दिन दूध मलाई भी मिला करती। इससे खून बनता तो था, लेकिन वह सारा खून उन घुर्राते कुत्तों के कारण सूख जाता था और बिल्ली वैसी ही रह गई।

रूपानगरी के मुख्यमंत्री की इस विचित्र बुद्धिमत्ता के लिए सनकी राजा ने एक लाख सोने के सिक्के ईनाम में भिजवाये।

वर्ग पहेली

–प्रस्तुति : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

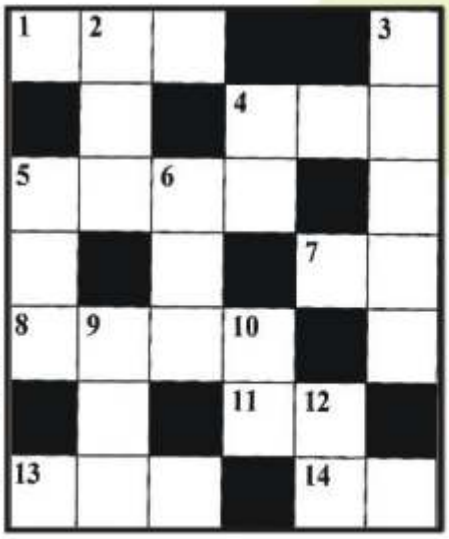

बाएं से दायें →

1. मद्रास और मैसूर में से जो कर्नाटक का पुराना नाम था।
4. पाकिस्तान और नेपाल का एक पड़ोसी देश जिसमें 29 राज्य और 7 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।
5. ननद का पति।
7. कॉफी बनाने के लिए कॉफी के पौधे का जो भाग इस्तेमाल किया जाता है (बीज/फल)।
8. दिल्ली स्थित महात्मा गाँधी का समाधि स्थल।
11. तवे का रंग।
13. दस के पहाड़े में दहाई के स्थान पर शून्य से नौ तक की संख्या आती है लेकिन ..... के स्थान पर शून्य ही आता है।
14. शुद्ध शब्द छांटिए : लहू/लहु।

ऊपर से नीचे ↓

2. अफ्रीका के सूडान देश से अलग होकर सन् 2011 में दक्षिणी..... एक नया देश बन गया।
3. पश्चिम बंगाल में स्थित एक भारतीय शहर जो लोकोमोटिव इंजन के उत्पादन के लिए मशहूर है।
4. बाली सुग्रीव का ..... था।
5. बेमेल शब्द छांटिए : दिमाग, कोहनी, हथेली, नखरा।
6. सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पहला फिल्मफेयर पुरस्कार फिल्म '.... जमीन' को मिला था।
9. जमैका और नेपाल में से जो देश एक द्वीप है।
10. बंगलादेश की मुद्रा।
12. गुदड़ी का ..... यानि गरीब परिवार में जन्मा गुणी व्यक्ति।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में है)

कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

दीवाली त्यौहार

दीपक जला चला अंधकार,
रोशनी का हुआ चमत्कार,
रोशन हो गई दसों दिशाएं,
आया दीवाली का त्यौहार।

अनार दिखलाए रोशनी फुहार,
चकरी नाचे बारम्बार,
फुलझड़ियों की शोख अदाएं,
लाया दिवाली का त्यौहार।

गुझियों की छाई बहार,
गुलाब जामुन पे आया निखार,
पकवानों से महकी फिजाएं,
आया दिवाली का त्यौहार।

उमंगित हो उठा संसार,
जगमगाया दीप त्यौहार,
लेकर दे दो शुभकामनाएं,
आया दिवाली का त्यौहार।

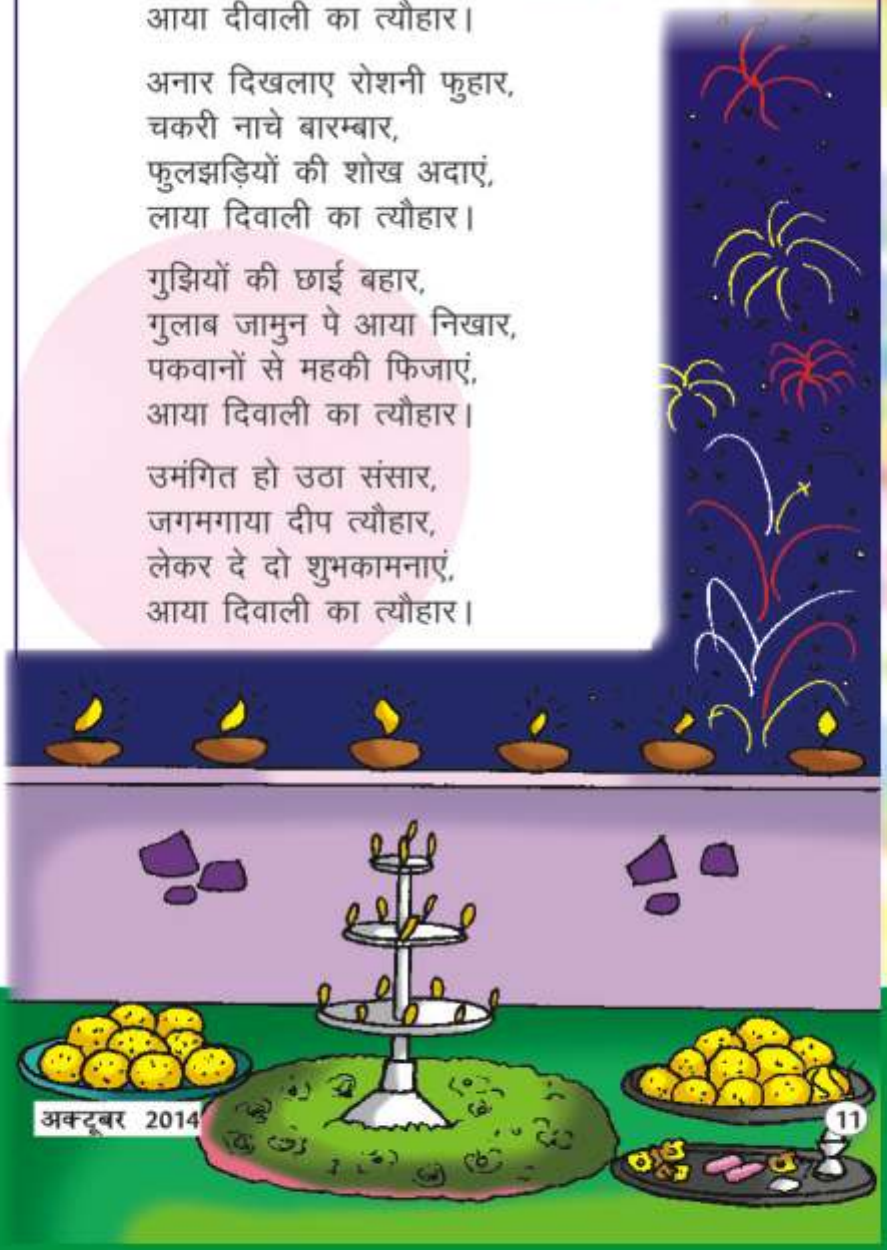

जन्म दिन मुबारक

श्रद्धा (सिडको)

कुणाल (फिरोजपुर)

जिहान (अहमदाबाद)

नेहल (कतुआ)

राहुल (माधोपुर)

अर्शदीप (मलेरकोटला)

दिपेन्द्र (सोगद्वारी तोल)

समरीत (पटियाला)

अगम (मुक्तसर)

रिदम (चण्डीगढ़)

ईशान (दिल्ली)

समर्पित (भिवानी)

संजोग (चण्डीगढ़)

ऋद्धि (वडसा)

अनमोल (माधोपुर)

नवदीश (फिरोजपुर)

आकृति (पटियाला)

अमरजोत (देवीवाला)

देविका (लेदुका)

सुदिक्षा (इन्दौर)

गुंजन (सादुलपुर)

दिया (दिल्ली)

हरलीन (सैदपुर)

युवराज (मुक्तसर)

रौनक (मुम्बई)

जान्वी (कोलकाता)

भव्या (इंदौर)

आदित्य (दिल्ली)

आयुषि (अम्बाला)

रक्षित (नाभा)

विनम्र (गोविन्दगढ़)

समिक्षा (घण्डीगढ़)

कनिष्का (गंगटोक)

साधिक (दिल्ली)

निर्जला (होडल)

तरूण (जीन्द)

तमन्ना (जीन्द)

तेजल (पनवेल)

शुद्धिता (दिल्ली)

हीर (गाँधीनगर)

सागर (इलाहाबाद)

नवजीत (लुधियाना)

रिया (सतना)

मिहिर (काटरी)

हर्षिता (ठाणे)

चिराग (नागपुर)

युवराज (डोंबिवली)

सरताज (होशियारपुर)

रणवीर (अमृतसर)

सनीशाह (लालगढ़)

इंशिका (सांगानेर)

अर्पिता (मीरा रोड)

मीत (ग्वालियर)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत 10 वर्ष तक की आयु के बच्चों के फोटो भेज सकते हैं। जिस माह में बच्चे का जन्म दिन हो, उससे दो माह पूर्व केवल पासपोर्ट साइज का फोटो इस पते पर भेजें।

सम्पादक, हँसती दुनिया,
पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कालोनी, दिल्ली–9

फोटो के पीछे यह कूपन चिपकाना अनिवार्य है।

नाम.....जन्म दिनांक.....वर्ष.....

पता .....

.....

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

चींटी ने मसला रावण

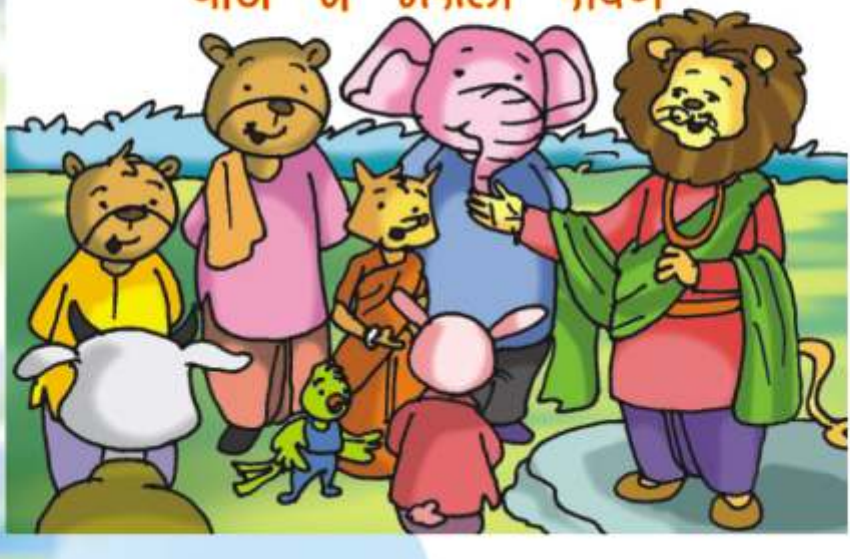

इस बार पशुओं की विशेष फरमाईश पर बालवन में भी दशहरा महोत्सव मनाने का निश्चय किया गया। फलस्वरुप रावण का विशालकाय पुतला और लंका का निर्माण कर लिया गया। अब समस्या आई उसका दहन कौन करे?

सिंहराज ने खुली सभा में पशुओं से पूछा– "कौन जलाना चाहता है रावण को?" लगभग सभी पशु–पक्षियों ने उत्साह में भरकर हाथ खड़े कर दिए।

सिंहराज ने समझाया– "रावण एक और दहनकर्ता अनेक। देखो दोस्तों, एक बार छोटे पशु उसे जलाएंगे और दूसरी बार बड़े पशु। ऐसे ही क्रम चलता रहेगा... अब चूंकि यह पहला अवसर है इसलिए छोटे पशुओं का हक बनता है। इस बार सब छोटे पशुओं ने हाथ खड़े कर दिये।

सिंहराज सोच में पड़ गये, एक पल बाद बोले– 'ऐसा करते हैं छोटे पशु–पक्षियों के बीच एक दौड़ करा देते हैं। उसमें जो पहले वापस

आयेगा उसे यह सम्मान दिया जाएगा।''

''कहाँ तक जाना होगा महाराज!'' कछुए ने चिंतित स्वर में पूछ लिया। दौड़ना–भागना उसे किसी सजा से कम नहीं लगता था।

सिंहराज ने बताया– 'अरे हाँ, यह बताना तो भूल गया। हमारे वन के बीच से पवित्र गंगा नदी बहती है, बस उसके जल को हाथ, मुँह, चोंच से स्पर्श कर आना होगा।'

छिपकली ने कहा– 'महाराज एक निवेदन है... चूंकि कुछ पशु–पक्षियों की गति अत्यंत धीमी है इसलिए जब तक सब वापस नही लौट आएं तब तक रावण का दहन नहीं किया जाए।'

सिंहराज ने स्वीकृति देते हुए आश्वस्त किया – 'ठीक है जब तक सारे पशु–पक्षी लौटकर नहीं आ जाएंगे, रावण दहन नहीं किया जायेगा।

सारे छोटे पशु–पक्षी दौड़ के लिए तैयार हुए। जैसे ही सिंहराज ने हरी झंडी दिखाई– कुत्ते, बिल्ली, चूहा, चींटी, छिपकली, खरगोश, सांप, कछुआ, कौआ आदि अनेक पशु–पक्षी तत्परता से दौड़ पड़े।

कछुए की तरह नन्हीं चींटी को बड़ा रोष था कि वह न कभी जीत पाएगी और न उसे कभी रावण जलाने का मौका मिलेगा। चींटी

बुदबुदाई– "क्या यह अधिकार तेज गति वालों की बपौती है? खून के घूंट पीते हुए वह अभियान में शामिल हुई।

शाम तक सारे पशु–पक्षी लौट आए। सबके अन्त में कछुआ पहुँचा। दरियाई घोड़े ने कहा– "महाराज सारे पशु–पक्षी लौट चुके हैं अब आप परिणाम की घोषणा कर दीजिए ताकि रावण दहन की प्रक्रिया में विलंब न हो।'

सिंहराज ने घोषणा की– 'आज की विजेता हैं नन्हीं चींटी, वही सबसे पहले गंगा के पवित्र जल को स्पर्श कर लौटी है।

सारे पशु–पक्षी आश्चर्यचकित होकर आपस में कानाफूसी करने लगे, सर्पराज ने फुफकराते हुए कहा– 'ऐसा कैसे हो सकता है महाराज? यह असंभव है।

खरगोश बोला– "इसमें जरूर चींटी की कोई चाल है, आप चाहें तो थोड़ा–सा अपने सामने सबको दौड़ा कर देख लीजिए, पता चल जाएगा।

सिंहराज स्वयं भी चकित थे इसलिए अन्य पशुओं की शिकायत पर उन्होंने चींटी से जवाब–तलब किया– "क्यों चींटी रानी कोई चालाकी तो नहीं की। गंगा मैया का स्पर्श करके आई हो न?"

"हाँ महाराज! मैं झूठ कैसे बोल सकती हूँ? आपका डर नहीं है क्या?' चींटी ने सफाई दी।

"चालाकी नहीं तो अतिरिक्त बुद्धिमानी दिखाई होगी, वही बता दो।" – लोमड़ी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

चींटी ने रहस्य प्रकट किया– "महाराज पिछले महीने मेरी दादी बीमार हुई थी तब उनके लिए एक शीशी गंगाजल मंगाया गया था। बस मैंने अपने बिल में जाकर उस शीशी के पानी को स्पर्श कर लिया और लौट आई।"

चींटी का बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर सुनकर सिंहराज प्रसन्न हो गए। फिर निर्णय लेते हुए बोले– "ठीक है इस बार चींटी ही रावण–दहन

करेगी।'' इसके बाद किसी का साहस नहीं हुआ विरोध करने का।

सियार पंडित ने कहा– ''महाराज दहन का मूहुर्त निकला जा रहा है। 51 फूट ऊँचे रावण तक पहुँचने में चींटी को बहुत समय लगेगा।''

भालू ने कहा– 'हाँ महाराज मेरा सुझाव है, चींटी को हाथी की सूँड पर बैठाकर उछाल दिया जाए।' गजराज सहर्ष तैयार होते हुए बोले– ''तुम ऐसा करो चींटी मेरी सूंड के अन्दर धीरे से प्रवेश कर जाओ।'' नन्हीं चींटी ने ऐसा ही किया, जैसे ही गजराज की नाक में खुजली चली उन्होंने जोर से छींक दिया। फिर क्या था... पल भर में ही चींटी रानी उछलकर रावण के सिर पर जा गिरी। सिंहराज ने जोर से कहा– 'अब माचिस की तीली से रावण को आग लगा दो और फौरन नीचे कूद पड़ो।'

रावण के चेहरे को देखते हुए चींटी उसकी मूछों को पकड़ते बोली– ''देख लिया रावण अपनी बुराई का अंजाम! इस समय तुम्हारी औकात क्या है... यही कि एक अदनी सी चींटी तुम्हें मसल रही है।''

कॉमनवेल्थ गेम्स में 64 पदकों सहित भारत पाँचवे स्थान पर

ग्लास्गो (स्कॉटलैण्ड) में 23 जुलाई से 3 अगस्त तक हुए कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत 15 स्वर्ण सहित 64 पदक जीतकर पाँचवे नम्बर पर रहा। आखिरी दिन पी. कश्यप ने बैडमिंटन के पुरुष सिंगल्स में भारत को 32 साल बाद स्वर्ण पदक दिलाया। इससे पहले 1982 में सैयद मोदी ने जीता था। उसके बादें 29 लड़कियों ने पदक जीते। अगले कॉमनवेल्थ गेम्स 2018 में गोल्डकोस्ट (ऑस्ट्रेलिया) में होंगे। अब नजर एशियन गेम्स पर है जो इसी साल 19 सितम्बर से 3 अक्तूबर तक दक्षिण कोरिया के इंचिझोन में एशियन गेम्स होंगे।

मात्र 10 साल की उम्र में हाई स्कूल का डिप्लोमा

लास एंजिल्स। भारतीय मूल का 10 वर्षीय एक प्रतिभाशाली बच्चा घर पर ही पढ़ते हुए सबसे कम उम्र में अमेरिका में ग्रेजुएट हाई स्कूल करने वाला बन गया है।

कैलिफोर्निया के सकरामेंटो का निवासी तनिष्क अब्राहम ने 'कैलिफोर्निया ऑटो म्यूजियम' में एक समारोह में अपना हाई स्कूल डिप्लोमा प्राप्त किया। सात साल की उम्र से घर पर ही पढ़ाई कर रहा अब्राहम मार्च में राज्य की परीक्षा में सफल हुआ था जिससे उसे अपना डिप्लोमा हासिल करने के लिए पर्याप्त अकादमिक योग्यता प्राप्त हो गई।

संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

बाल कहानी : चित्रेश

चन्दन वन की दीवाली

चन्दन वन में धूमधाम से दीवाली मनाने की तैयारी चल रही थी। मोटू हाथी ने सुझाव दिया– "बच्चों, इसके लिए झरने के पास वाला मैदान अच्छा रहेगा।"

सुमुख बन्दर, चिप्पू हिरन, सोनू गीदड़, कलुआ भालू, पतलू जिराफ सभी स्थान देखने चल पड़े। वास्तव में वह सुन्दर और सुरक्षित जगह थी। दो तरफ ऊँचे पहाड़ थे, तीसरी तरफ चाँदी से चमकते पानी का झरना। बीच में लम्बा–चौड़ा मैदान था, जो आगे जाकर घने जंगल से मिल गया था। वह स्थान देख, सबने मोटू के चुनाव की प्रशंसा की।

बस फिर क्या था, सबने मिलकर वह स्थान साफ कर डाला। बिल्ली मौसी और कलुआ भालू मिठाई–पकवान बनाने की तैयारी में जुट गये। सुमुख बन्दर ताजे फल लाने चला गया। आतिशबाजी का सामान लाने पतलू जिराफ और सोनू गीदड़ शहर चल पड़े। खैरी नील

गाय पर दूध लाने की जिम्मेदारी थी। सब अपने–अपने काम में जुटे थे। मोटू हाथी कहीं नहीं गया। वहीं मैदान में एक कोने में बरगद की घनी छांव में बैठा रहा। सबने उससे कहा भी था– "दादा आप सबसे बड़े हैं। बुद्धि में भी सबसे आगे हैं। इसलिए आप व्यवस्था देखिये।"

उसकी व्यवस्था का क्या कहना! जब भी वह किसी को गलती करते देखता, तो अपने पास बुलाकर प्रेम से समझा देता। इस प्रकार मोटू की देखरेख में दीवाली की दोपहर तक सारी व्यवस्था पूरी हो गयी। फिर सबने झरने में स्नान किया। कलुआ भालू और बिल्ली मौसी ने पूड़ी–कचौड़ी के साथ रायता, सब्जी, चटनी और खीर की जेवनार परोसी। सबने चटखारे ले–लेकर खाना शुरू किया। जब वे भोजन कर चुके तो मोटू ने कहा– "बच्चों अब शाम तक आराम कर लो, ताकि रात में देर रात तक जागकर दीवाली मनाने में परेशानी न हो।"

सब पेड़ों की छाँव में आराम करने लगे। उन्हें नींद आने लगी और वे एक–एक करके सो गये। मोटू जागता रहा। शाम को उसी ने सबको जगाया। झरने में हाथ–मुँह धोकर सबने जलपान किया।

इस बीच शाम गहरी हो चुकी थी और अंधेरा फैलने लगा था। दीवाली के दीपक जलाने की जिम्मेदारी जुगनुओं की थी। मोटू का इशारा पाकर वे आसपास के पेड़ों और पहाड़ों पर फैल गये। उनके टिमटिमाने से अंधेरा दूर भाग गया। बाकी सबने मोटू से अपने हिस्से की चर्खियां, बम, पटाखे, अनार इत्यादि लिए और मैदान में बिखर गये।

तभी रंग में भंग पड़ने की नौबत आ गयी। जानवरों के चेहरे पीले पड़ गये। चिम्पू हिरण कुलाँचे भरता मोटू के पास पहुँचा और बोला– "दादा! सामने जंगल में बाघराज हमारी ताक में बैठा है।"

मोटू हाथी झूमता हुआ आगे आया। उसने बाघराज की चमकती आँखें देख ली थी। डरे–सहमें जानवर उसके पास आ गये।

बिल्ली मौसी बोली– "दादा लग रहा है, सारी तैयारी व्यर्थ हो जायेगी।"

"ऐसा कुछ नहीं होगा। अभी मैं बाघराज को भगाता हूँ। "यह कहकर उसने सूँड से खिसकाकर कुछ चट्टाने बाघराज के ऐन सामने कर दिया। चट्टानों पर करीब एक दर्जन बड़े राकेट रखे और सुमुख से कहा– "माचिस जलाकर राकेट की बत्तियों से छुआ दो।"

सियार, खरगोश, हिरन, चीतल सभी यह कार्यवाही कौतूहल से देख रहे थे। सुमुख ने तीली जलाई और बत्तियों से छुआने लगा। एक.... दो.... तीन.... बाघराज ने एक के बाद एक कई आग के गोले अपनी तरफ आते देखे तो डर के मारे सिर पर पैर रखकर 'नौ दो ग्यारह' हो गया।

"जमकर दीवाली मनाओ। बाघराज अब इस तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं करेगा।"– मोटू ने कहा और जाकर अपने स्थान पर बैठ गया।

मोटू ने सच कहा था। बाघराज उस रात फिर नहीं आया और चंदन वन की वह दीवाली सबने खूब मौज–मस्ती के साथ मनाई।

■ ■ ■

प्रस्तुति : विकास अरोड़ा

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

सभी प्रश्नों के उत्तर 'ट' अक्षर पर खत्म होते हैं। पेन या पेन्सिल उठाइए और प्रश्नचिन्ह के बाद उत्तर लिखते जाइए।

प्रश्न 1 : दिल्ली का फिरोजशाह कोटला मैदान किस खेल से सम्बन्धित है? .....ट

प्रश्न 2 : वास्को–डी–गामा सबसे पहला भारत में किस जगह पर आया था? .....ट

प्रश्न 3 : मोरारजी देसाई की अहमदाबाद स्थित समाधी का क्या नाम है? ....ट

प्रश्न 4 : एक घण्टे में क्या साठ होते हैं? .....ट

प्रश्न 5 : नीला थोथा का रासायनिक नाम क्या है? .....ट

प्रश्न 6 : ओमान देश की राजधानी कौन–सी है? .....ट

प्रश्न 7 : मुगल सम्राट अकबर का जन्म–स्थान कौन सा है?....ट

प्रश्न 8 : थियोसोफिकल सोसाईटी की स्थापना किसने की थी?....ट

प्रश्न 9 : विराट नगर के किस राजा के यहाँ पांडवों ने एक साल अज्ञातवास में बिताया था? .....ट

प्रश्न 10 : भारत के पहले समाचार पत्र का क्या नाम था? .....ट

प्रश्न 11 : 'रन आउट' शब्द का प्रयोग किस खेल में किया जाता है? .....ट

प्रश्न 12 : किस महान भौतिक वैज्ञानिक के नाम पर तापमान मापने की इकाई फारेनहाइट रखी गई है? .....ट

प्रश्न 13 : राष्ट्रपति भवन के सामने स्थित पहले विश्वयुद्ध के शहीदों की याद में बने स्मारक का क्या नाम है?.....ट

प्रश्न 14 : कम्प्यूटर के संदर्भ में आठ बिटों के समूह को क्या कहते हैं? .....ट

प्रश्न 15 : दिल्ली स्थित महात्मा गाँधी की समाधि का क्या नाम है? .....ट

(सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

बाल कविता : गोविन्द भारद्वाज

मेरी माँ

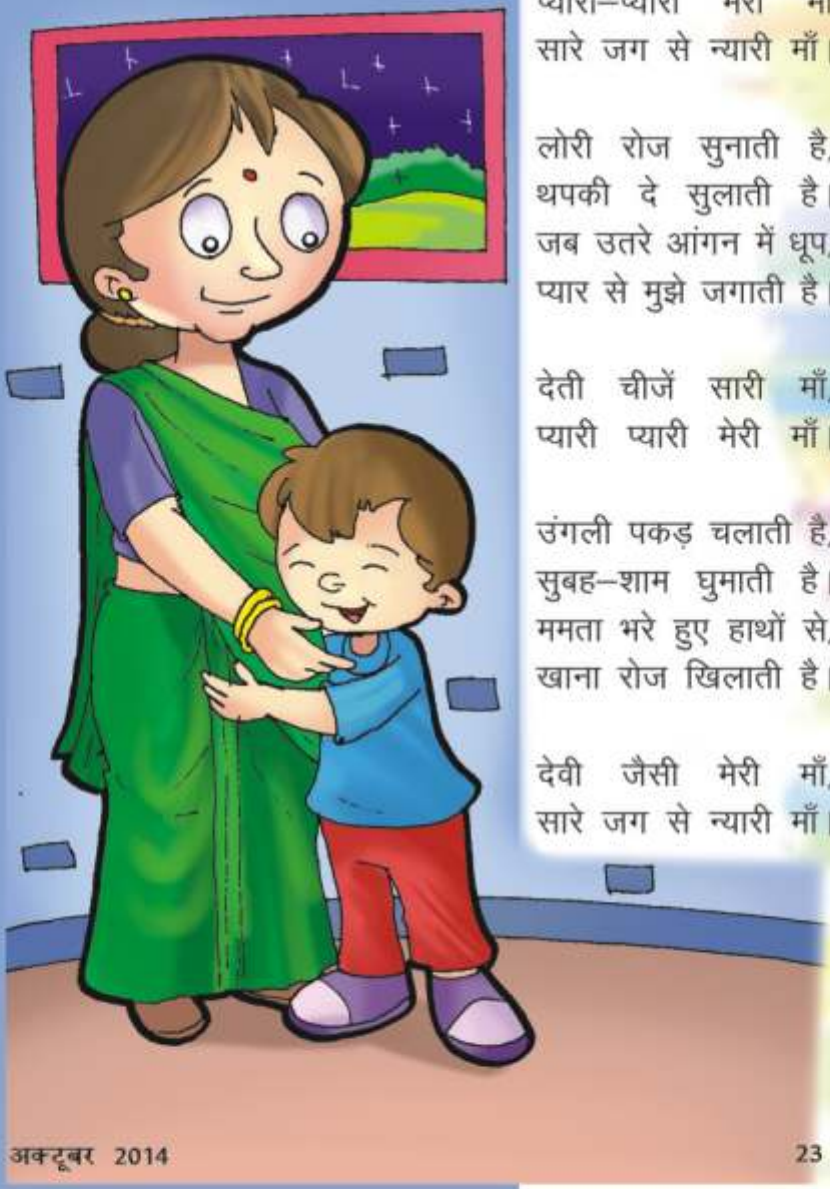

प्यारी–प्यारी मेरी माँ
सारे जग से न्यारी माँ।

लोरी रोज सुनाती है,
थपकी दे सुलाती है।
जब उतरे आंगन में धूप,
प्यार से मुझे जगाती है।

देती चीजें सारी माँ,
प्यारी प्यारी मेरी माँ।

उंगली पकड़ चलाती है,
सुबह–शाम घुमाती है।
ममता भरे हुए हाथों से,
खाना रोज खिलाती है।

देवी जैसी मेरी माँ,
सारे जग से न्यारी माँ।

पहेलियां

प्रस्तुति : राधा नाचीज़

1. लंबी टांगें लंबी गर्दन
लेकिन नही जिराफ।
बेढब डीलडौल में सचमुच,
समझ गये क्या आप।।

2. नाम बताओ उसका
जो है कहलाता।
आधुनिक रसायन शास्त्र
का जन्मदाता।।

3. संग मदारी के वह आता,
ठुमक–ठुमक कर नाच दिखाता।
पड़ी नाक में बड़ी नकेल,
खुश होकर सब देखें खेल।।

4. पेट फोड़ा तो कल,
सिर तोड़ा तो मल।
पांव टूटे तो कम,
हँसता है हरदम।।

5. जमीन के ऊपर है,
अन्दर भी रहता है।
धुंआ बन गगन में,
इधर–उधर बहता है।।

6. खाना कभी नहीं खाता वह,
और न पीता पानी।
उसकी बुद्धि के आगे तो,
हार मानते ज्ञानी।।

7. पांच वृत ओलम्पिक का प्रतीक बनाते,
किन आदर्शों पर चलना वह हमें सिखाते?

8. कौन–सी वस्तु है,
जिसके न हाथ है न पैर।
आदमी चाहे तो उसे,
भेज सकता है दूर।।

9. कहलाती हूँ मौसी,
गुर्रा कर झौंसी।
साधे रहती पूंछ,
नारी हूँ, पर हैं मूंछ।

10. बाहर से है दूधिया रंग,
अंदर बैठा पीला मलंग।

11. इधर से आऊं ,
या उधर से आऊं।
दांतों से कुतरूं,
कुछ भी न खाऊं।।

12. सूखे पत्तों में नग–सी जड़ी,
सोने के रंग की रस से भरी।

(पहेलियों के उत्तर
किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)

जानकारी (पक्षी जगत्) : उमेश प्रसाद सिंह

आकर्षक पक्षी हुदहुद

यूरोप के सभी देशों का मुख्य पक्षी है – हुदहुद। बोलते समय यह 'उक–उक' शब्द का उच्चारण करता है जिसे अंग्रेज 'हुप–हुप' कहते हैं। इस ध्वनि के कारण अंग्रेजों ने इसका नाम 'हुपू' रखा। इस उच्चारण को इस्राइली लोगों ने हुदहुद समझा और इसका नाम हुदहुद रखा। इसकी चोंच नाखून काटने वाली 'नहरनी' नामक औजार से मिलती–जुलती है, इसलिए हमारे देश के अनेक भागों में इसे 'हजामिन' भी कहते हैं। इसके सिर पर सुन्दर सी कलगी लगी होती है, जिस कारण कुछ लोग इसे 'शाह सुलेमान' कह कर पुकारते हैं। प्राचीन रोम में इसे उपुपा तथा यूनान में इपौपस नाम से भी जानते थे।

हुदहुद की चोंच पतली, लंबी तथा तीखी होती है जिसके जरिये यह आसानी से जमीन के भीतर छिपे कीड़े–मकोड़ों को ढूंढ निकालता है। इसे फल–फूलों का शौक नहीं। कीड़े–मकोड़ों को ही यह अपना आहार बनाता है। अक्सर यह पक्षी बाग–बगीचों, खण्डहरों आदि में नज़र आता है।

हुदहुद देखने में अत्यंत सुन्दर पक्षी है। नर और मादा, दोनों के सिर पर कलगी होती है जो इसकी खूबसूरती में चार चांद लगाती है।

इसके शरीर का रंग एक जैसा नहीं होता। पंख सुनहरे और काले होते हैं। गर्दन का अगला हिस्सा बादामी रंग का होता है।

हुदहुद की लगभग एक दर्जन प्रजातियां हैं। इनमें से एक वे हैं, जिन्हें हम विलायती ह सकते हैं। इस प्रजाति के हुदहुद यूरोप के देशों में पाये जाते हैं।क ये प्रायः सफेद होते हैं। इसकी दूसरी प्रजाति इस्राइल और अरब देशों में पायी जाती है। इसके अण्डों का रंग हल्का नीला होता है। यह पक्षी पेड़, दीवार, खंडहर आदि के कोटरों (छिद्रों) में घोंसला बनाता है। मादा तीन से 10 अंडे देती है। अंडों से यह तब तक नहीं हटती जब तक चूजे बाहर न निकल आएं। इस दौरान नर हुदहुद भोजन की व्यवस्था करता है।

प्राचीन यूनान के भित्ति चित्रों में हुदहुद ने विशिष्ट स्थान पाया है। यहुदी लोग इसे स्वर्ग का पक्षी कहते हैं तथा इसे पवित्र पक्षी मानते हैं। कभी माना जाता था कि इस पक्षी के पंख सोने के हैं, इस अज्ञानता के चलते इन पक्षियों को बड़ी संख्या में नष्ट किया गया। •••

रोचक जानकारी

★ हाथी मनुष्य की गंध 3000 फुट की दूरी से पहचान जाता है।

★ कॉक्रोच बिना भोजन के लगभग 45 दिन तक जिन्दा रह सकता है।

★ कोबरा सांप के एक ग्राम ज़हर से 150 व्यक्ति मर सकते हैं।

★ कछुआ बिना पानी एवं वायु के कई दिन तक जीवित रह सकता है।

★ समुद्री 'मछली हैग फिश' के चार दिल होते हैं।

★ हरे टिड्डे के कान उसके पैर पर होते हैं।

★ दक्षिणी अमेरिकी बिटर्न पक्षी बाघ की तरह बोलता है।

★ मेंढक मक्खी के आकार से लेकर एक फुट तक भी लम्बा होता है।

–प्रस्तुति : विभा वर्मा

बाल कहानी : दिनेश 'दर्पण'

निराली भूख

तैमूर शाह ने इधर–उधर से भारत में आपार धन–दौलत होने की यानी भारत को सोने की चिड़िया होने की अनेक कहानियां सुनी तो तुरंत ही पूरे दल बल के साथ भारत पर हमला कर बैठा। एक बार ऐसे ही लूटपाट करते तैमूर अपने साथियों के साथ कहीं जा रहा था कि न जाने कैसे वह अपने साथियों से बिछुड़ गया और जंगल में भटकते–भटकते एक गाँव में पहुँच गया। गाँव के लोगों ने जब अपने गाँव में एक परदेसी को देखा तो उसे गाँव के मुखिया के पास ले गये। मुखिया ने अपने अतिथि का खूब आव–भगत, आदर–सत्कार किया और बढ़िया स्वादिष्ट भोजन बनाया। खाने को अच्छे–अच्छे रसीले फल भी रखे और साथ ही एक थाल में सोने–चाँदी, हीरे–जवाहरात आदि भी भोजन के साथ रखा गया।

खाने के साथ सोना–चाँदी आदि देखकर तैमूर चौंक गया और उसने पूछा कि सोने–चाँदी और खाने की चीजों का क्या तालमेल। खाने के साथ ये चीजें क्यों और किसलिए?

मुखिया ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया कि– आपकी आँखों को देखकर लगता है कि आप सोने–चाँदी, हीरे–जवाहरात, धन–दौलत के बहुत भूखे हैं; केवल भोजन कर लेने से ही आपकी भूख नहीं मिटेगी। इसलिए भोजन के साथ सोने–चाँदी आदि को भी रख दिया ताकि आप को संतुष्टि प्राप्त हो।

मुखिया की बात सुनकर तैमूर झेंप गया। यह कैसे लोग हैं? आदमी की नस–नस की कैसे पहचान कर लेते हैं? खैर पेट में चूहे कूद रहे थे। इसलिए वह खाने पर टूट पड़ा। इसी बीच गाँव के दो किसान मुखिया से फरियाद करने आये। दोनों लड़ते–झगड़ते आ रहे थे।

मुखिया ने पूछा– रामू क्या बात है? क्यों श्यामू से झगड़ रहे हो?

रामू बोला– देखिये मुखिया जी, आप ही अब न्याय कीजिये, फैसला कीजिये। उसने एक घड़ा दिखाते हुए कहा कि मैंने श्यामू से खेत खरीदा था। वह तो आपको मालूम ही है। मैं जब हल चला रहा था तो खेत में से मुझे यह सोने के सिक्कों से भरा हुआ घड़ा मिला है। मैं इस घड़े को वापस लौटा रहा हूँ क्योंकि मैंने तो खेत खरीदा है उसके अंदर का घड़ा थोड़े ही खरीदा था। लेकिन यह ये घड़ा लेने से इंकार कर रहा

है और कह रहा है कि मैंने जब खेत बेचा था तब मुझे नहीं मालुम था कि खेत के अन्दर क्या है, कहता है कि अब चाहे खेत से मिट्टी निकले या सोना सब तेरा ही है– तू ही उसका मालिक है।

दोनों किसानों की बात सुनकर तैमूर हैरान हो गया। वह सोचने लगा कि इनके लिए सोना–चाँदी, धन की कोई कीमत नहीं है?

मुखिया ने जब देखा कि दोनों में से कोई भी घड़ा रखने को तैयार नहीं तो उसने कहा– देखो भाई, जब कोई नहीं रखता तो गाँव की पंचायत को सौंप दिया जायेगा और पंचायत जनता की भलाई के जिस काम में चाहेगी खर्च कर ले, बस मेरा यही फैसला है।

दोनों किसान वहाँ वह घड़ा छोड़कर हँसते–हँसते अपने घर चले गये और तैमूर खड़ा हुआ सारा तमाशा देखकर हैरान रह गया। ■

अद्भुत विचित्रता भरी बातें

★ विश्व में डिपर फ्लाई नामक एक कीट है जो 800 मील प्रति घण्टा की रफ्तार से उड़ता है।

★ संसार का सबसे बड़ा कछुआ आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। जिसकी लम्बाई 12 फुट, मोटाई 10 इंच है।

★ टार्च जैसी रोशनी लेकर चलने वाली मछली का नाम नाइजेन्टेक्स है।

★ नाइट्रस ऑक्साइड एक ऐसी गैस है जिसे आदमी सूंघता है तो हँसता ही रहता है।

★ मनुष्य से 6000 से 33000 गुना अधिक कुत्तों में सूंघने की शक्ति रहती है।

★ चमगादड़ से भी रेबीज फैलता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि चमगादड़ दुर्लभ किस्म वाले वायरसों के प्रथम वाहक होते हैं।

प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

लेख : कमल सौगानी

जंगल के पशु–पक्षी भी किसी डॉक्टर से कम नहीं

प्राकृतिक वातावरण में विचरण करने वाले तमाम विश्व भर में पशु–पक्षी अपना इलाज स्वयं करते हैं। सच पूछा जाये तो बेजुबान पशु–पक्षी भी अपने मस्तिष्क में कई रोगों के बारे में जानकारी रखते हैं। एक तरह से हर पशु–पक्षी अपने आप में एक डॉक्टर भी है।

अपना इलाज खुद पशु–पक्षी कैसे करते हैं? यह खोज क्योटा यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर 'सर हनफनेन' ने की है। उन्होंने एक बीमार जंगली मादा चिम्पाजी चासिकू पर नजर रखी। उन्होंने पाया; अनमनी–सी लगने वाली एक मादा चिम्पाजी जब समूह के साथ चल रही थी तो अचानक रूककर बेवजह एक मर्जोसी वृक्ष की छाल निकालकर उसे मुँह में लेकर चूसने लगी। दूसरे दिन उन्होंने देखा कि वह सामान्य थी और घास, अदरक व अन्य फल खा रही थी।

दरअसल मर्जोसी में कई औषधीय गुण हैं। इस पौधे का उपयोग मलेरिया परजीवी के संक्रमणों और पेट की गड़बड़ियों के लिए किया जाता है। हाँ, जानवरों में उपचार के लिए इस पौधे को चयन करने की प्रकृति स्वाभाविक है।

जंगल के पशु–पक्षी अपना उपचार करने के लिए सही पौधा चुनते हैं। बल्कि वे यह भी जानते हैं कि पौधे का कौन–सा भाग खाना है। ये जो पतियां या छाल खाते हैं, वह 'इंटेस्टाईल' में आकर उसमें मौजूद कृमियों को लेकर उत्सर्जन सहित निकल जाती है।

दक्षिण अफ्रीकी जंगलों में रहने वाले खूंखार प्रवृत्ति के काले मुँह वाले बन्दर के पेट में जब दर्द होता है तो वह बरकील प्रजाति के पौधे की पत्तियां तोड़कर चबाता है, इससे उसका पेट तुरन्त ठीक हो जाता है। इसी तरह यहाँ के जंगलों में 'लोकिन्स' प्रजाति का सुनहरा गिद्ध रहता है। जब इसके शरीर में ज्यादा दर्द सताने लगता है तो यह 'कोपेरी प्रजाति' के वृक्ष के फूलों को खाता है। इससे उसके शरीर का दर्द दूर हो जाता है।

चीन की 'चिपेरी' जाति की चिड़िया मीठे नीम की पत्तियां खाकर अपना पेट साफ करती है। यहाँ के कुछ पक्षी अपने बदन पर घाव होने पर 'सेल्दू' नामक वृक्ष के फूलों को खाते हैं, इससे उसके घाव शीघ्र सूखने व भरने लगते हैं।

भालू के पाँव में जब दर्द सताने लगता है तो वह शहद खाकर अपना दर्द दूर करता है। इसी तरह शेर के दाँतों में जब कोई बारीक टुकड़े फंस जाते हैं तो वह 'फ्रिकोली' नस्ल की घास चबाकर अपने दाँतों में फंसे टुकड़े निकाल लेता है। दरअसल यह घास खाने से मुँह में सफेद–सफेद झाग होने लगती है। ये झाग चिकने होते हैं, इस कारण दाँतों की सफाई अच्छी तरह से हो जाती है।

जंगली सुअर का जब सिर दर्द करने लगता है तो वह ठण्डे पानी में जाकर बैठ जाता है। उसका सिर दर्द दूर होने लगता है। कई आसमानी पक्षियों को जब चक्कर आने लगते हैं तो ये किसी पेड़ पर बैठकर उसके पत्ते सूंघना शुरू कर देते हैं, इससे उन्हें चक्कर आना बन्द हो जाता है।

अजगर जब जरूरत से ज्यादा शिकार निगल लेता है, तो किसी पेड़ के सहारे लिपट जाता है, इससे काफी आराम मिलता है।

दो बाल कविताएं : अंकुश्री

खरगोश

छोटा है पर
खोटा है यह
बुद्धि का नहीं
मोटा है यह।

चालाकी में
यह है आगे
बड़ा जानवर
इससे भागे।

तभी तो यह
रहता वन में
शत्रु के बीच
बहुत सघन में।

सफेद तन पर
दो लंबे कान
दूर–दूर से
हो पहचान।

साही

गाँव–जंगल में
रहता है यह
शिकारियों से
डरता है यह।

कांटेदार हैं
इसके बाल
शत्रु के लिए
बन जाए काल।

सफेद बाल पर
चित्ती काली
कहीं–कहीं पर
मिलती लाली।

जैसे यह पूंछ
घुमाता है।
बाघ भी देख
डर जाता है।

भैया से पूछो

– अमनप्रीत (काईनोर)

प्रश्न : भैया जी! मन जब गलत राह पर भटके तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : आत्म–विश्वास कर एकाग्रता से परमात्मा का सुमिरण करें ताकि सद्मार्ग याद रहे।

प्रश्न : ज्यादा सुख किसे प्राप्त होता है?

उत्तर : जो सद्मार्ग पर सद्व्यवहार से कुशलतापूर्वक चलता है तथा प्रभु पर विश्वास रखता है।

– वरिन्दर कालड़ा (मण्डी लाधुका)

प्रश्न : इन्सान के लिए सबसे अच्छा कौन–सा समय है?

उत्तर : सफलता प्राप्ति का अवसर।

– ज्योति खनेजा (कलानौर)

प्रश्न : सब्र और संतोष में कितना फर्क है और कैसे? बताइए।

उत्तर : केवल भाषा का; 'सब्र' उर्दू भाषा का तथा 'सन्तोष' हिन्दी भाषा का शब्द है।

– महेन्द्र भाटिया (अमरावती)

प्रश्न : जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है?

उत्तर : स्वयं की जानकारी व पूर्णता प्राप्त करना।

– दीपक जेस्वानी (हिंगनघाट)

प्रश्न : दूसरों के दिलों में अपनी जगह बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर : दिखावे से दूर रहकर सद्व्यवहार करना चाहिए।

– अनिता रानी (चण्डीगढ़)

प्रश्न : हमारा मन साफ है पर कोई हमें गलत समझता हो तो हमें क्या करना चाहिए?

उत्तर : उसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिए। अपना मन साफ रखना ही पर्याप्त है।

– अनमोल अम्बले (चिटगुप्पा)

प्रश्न : भैया जी! भक्ति और ज्ञान मार्ग में क्या अन्तर है?

उत्तर : भक्ति आत्मा के परम–आत्मा हो जाने की युक्ति का नाम है व ज्ञान प्रकृति के ज्ञान–विज्ञान की जानकारी को कहते हैं। वैसे साधारण तौर पर दोनों को एक रूप में व्यक्त कर दिया जाता है।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

प्रश्न : यदि मन निराश हो जाए तो क्या करें?

उत्तर : जीवन में उतरी प्रभु–कृपाओं को याद कर एकाग्रतापूर्वक प्रभु–सुमिरण करना चाहिए।

– प्रहलाद जसवानी (मण्डला)

प्रश्न : अच्छाई किन चीजों से प्राप्त होती है?

उत्तर : सत्संगति, सद्व्यवहार और सदाचार से।

प्रश्न : रब्ब (ईश्वर) कौन सी उम्र में मिलता है?

उत्तर : किसी भी उम्र में।

प्रश्न : इन्सान की इज्जत किस चीज़ से बढ़ती है?

उत्तर : सद्चरित्र से।

– अनिल डेंगानी (वडसा)

प्रश्न : भैया जी, जब हम सेवा करते हैं तब मन में क्या भाव होना चाहिए?

उत्तर : सम्पूर्ण समर्पण भाव।

प्रश्न : अहंकार को किस प्रकार से काबू में किया जा सकता है?

उत्तर : अपनी कमियों को याद रखकर व सर्वगुण सम्पन्न परमात्मा तथा सद्गुरु के प्रति समर्पित होने से।

– प्रिया निरंकारी (वडसा)

प्रश्न : आत्मविश्वास को कैसे बढ़ाएं?

उत्तर : सदाचारी व मर्यादाशील जीवन जीकर।

पहेलियों के उत्तर :

1. ऊँट 2. लिवेशिये 3. भालू 4. कमल 5. पानी 6. कम्प्यूटर 7. विश्वशांति, सद्भाव व मैत्री 8. चिट्ठी 9. बिल्ली 10. अंडा 11. आरा 12. रसभरी।

कहानी : ओमदत्त जोशी

जब बन्दर बना जंगल का राजा

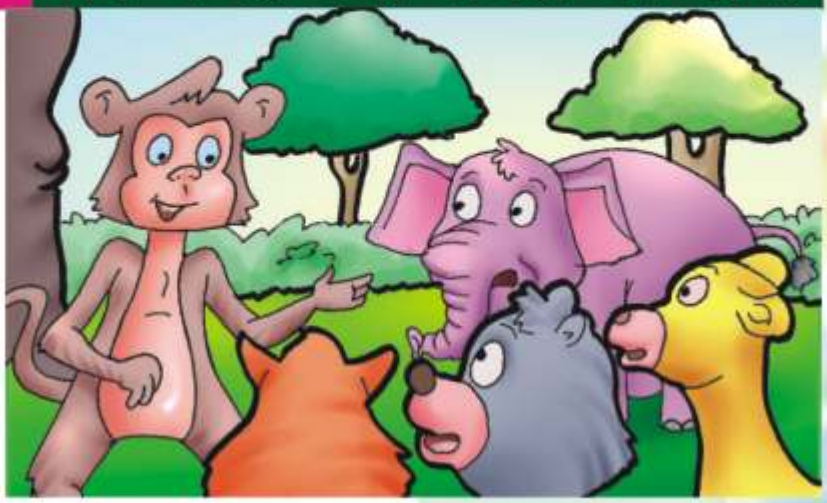

एक जंगल था। उसमें कई जानवर सियार, हिरण, लोमड़ी, भालू, चीता, हाथी, शेर, बन्दर, खरगोश आदि रहते थे। कई वर्षों से जंगल का राजा शेर ही बना हुआ था। यह व्यवस्था अब मुख्य रूप से बन्दर को अखरने लगी। समय परिवर्तनशील है। संसार में कई परिवर्तन हो गये हैं लेकिन हमारे जंगल में इतने वर्षों से शासन में कोई बदलाव नहीं हुआ। प्रजातंत्र में सबको ही जंगल का राजा बनने का अधिकार है।

वैसे भी जंगल का राजा शेर बहुत बूढ़ा हो गया है। कमजोर हो गया है। पहले जैसी स्फूर्ति भी नहीं रही है। दबी जबान से सभी बदलाव चाहते हैं लेकिन गले में घण्टी कौन बाँधे? किसी में इतना साहस नहीं था कि शेर का विरोध करे। इस बार यह हिम्मत बंदर ने की। उसने सभी जानवरों की एक सभा रखी। उसमें, उसने अपने विचार रखे– "प्रजातंत्र में सभी को जंगल का मुखिया बनने का अधिकार है। वर्षों से जंगल का राजा एक शेर ही बना हुआ है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि अब किसी अन्य को जंगल का राजा बनाया जाए।

बंदर की बात सभी ने सुनी और नीची गरदन कर बैठ गये जैसे सभी को साँप सूंघ गया हो। मुखिया का बदलाव का मतलब शेर से पंगा मोल लेना। आ बैल मोहे मार यह कोई नहीं चाहता था। सब चुप बैठे थे।

बंदर ने सभी में साहस भरते हुए कहा– "देखो भाइयों! ऐसे चुप रहने से काम नहीं चलेगा। आपको अपनी राय देनी होगी। नहीं तो लकीर के फकीर बने रहो।"

इससे जानवरों में खुसर–फुसर होने लगी। हिम्मत दिखाते हुए भालू ने मुँह खोला– "पर, बंदर भाई! शेर से दुश्मनी मोल कौन लेगा?"

बंदर हँसते हुए बोला– "इसमें दुश्मनी की क्या बात है? समय के अनुसार बदलाव होना चाहिए। यह तो प्रकृति का नियम है। फिर एक का निर्णय नहीं है, सभी का निर्णय है। संगठन में शक्ति है, शेर क्या करेगा?"

सभी के चेहरे खिल गये। हिरण ने कहा– "बंदर भाई जो कह रहा है, वह सही है कि यदि हम लोगों में संगठन है तो शेर हमारी बात को टाल नहीं सकता... ।"

इतने में सियार बीच में ही बोल पड़ा– "वैसे भी शेर बूढ़ा हो चला है। वह भाग–दौड़ नहीं कर सकता है। दिन भर अपनी मांद के अन्दर सोया रहता है। उससे किसी भी सहायता की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए।"

जानवरों में फिर खुसर–फुसर हुई कि इस बार बंदर को ही राजा बना दिया जाए तो ठीक रहेगा। यदि शेर नाराज भी होगा तो बंदर का नाम आयेगा। बदलाव की बात उसी ने रखी है। वही सभी को परिवर्तन के लिए उकसा रहा है। इस प्रकार गुपचुप में अपना निर्णय बना लेते हैं।

थोड़ी देर बाद सबने एक राय होकर, बंदर को जंगल का राजा बनाने का प्रस्ताव रखा। यह निर्णय सुन बंदर मन ही मन फूला न समाया। उसने बाहरी मन से कहा– "भाई लोगों! इस निर्णय पर एक बार फिर से भली प्रकार सोच लो। मेरे से भी अधिक बुद्धिमान, बलवान अन्य जानवर भी यहाँ उपस्थित हैं। मेरी इच्छा है कि उनमें से किसी को राजा हेतु चुन लो।"

सभी ने एक स्वर में कहा कि हमने सर्वसम्मति से जो निर्णय कर लिया सो कर लिया। इतना कहते ही सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट एवं फूल माला से बंदर का स्वागत किया। बंदर को भालू और चीते ने दोनों तरफ से पकड़ कर सबके बीच एक ऊँची चट्टान पर बैठाया। फिर सभी ने जोरदार जयकारे के साथ तालियों से स्वागत किया।

भालू ने कहा, "आज से ही बंदर हमारे जंगल का राजा है। हमें अपना दुःख–दर्द, पीड़ा तथा समस्या के निवारण हेतु इनकी सहायता लेनी होगी।" सभी ने फिर जय–जयकार के साथ तालियां बजायीं।

बंदर ने भी हाथ जोड़कर सभी का आभार प्रदर्शन किया और कहा– "मेरे से भी अधिक बुद्धिमान, बलवान जानवरों को छोड़ कर मुझे आपने जंगल का राजा चुना है, मैं इसके लिए आपका आभारी हूँ। अपने तन–मन से जितनी भी मुझ से बन पड़ेगी, मैं आपकी सेवा करूँगा।"

सभी ने पुनः तालियाँ बजायी। सभा का विसर्जन हो गया। सभी ने अपने–अपने निवास स्थान का रास्ता नापा। सब के चले जाने के बाद, बंदर को शेर का भय सताने लगा। यदि उसे पता लगेगा तो वह मुझ से बदला अवश्य लेगा। दूसरे ही क्षण उसकी वृद्धावस्था को देख कर प्रसन्न होता कि उसमें इतना बल नहीं है कि मेरे तक पहुँच पायेगा क्योंकि वह चलने–फिरने में असमर्थ है।

दो–एक माह पश्चात्। एक दिन एक शेर, खरगोश के बच्चे को उठा कर ले गया। खरगोश दौड़ा–दौड़ा, हाँफते–काँपते बंदर के पास आया और कहने लगा कि– "बंदर राजा, बंदर राजा! मेरे बच्चे को शेर उठा कर ले गया है, आप जल्दी से उसे बचा लीजिए। नहीं तो वह उसे मार डालेगा...।"

बंदर ने खरगोश की बात ध्यान से सुनी और उछल–कूद करने लगा। इस पेड़ पर तो कभी उस पेड़ पर भागम–भाग मचाने लगा। पसीने से तर–बतर हो गया। इस तरह भाग–दौड़ करते देख खरगोश क्रोध से आग–बबूला होकर कहने लगा, "बंदर राजा, आप यह क्या कर रहे हैं?

मेरे बच्चे को छुड़ाने का प्रयास नहीं करके, केवल यहीं पर पेड़ों पर भाग–दौड़ कर रहे हैं। इतने में तो वह शेर मेरे बच्चे को मार डालेगा... ।''

बंदर ने कहा– ''मैं इतनी भाग–दौड़ कर रहा हूँ, देखो कितना पसीना बह रहा है? इससे और ज्यादा मैं क्या कर सकता हूँ?'' और वह पुनः पेड़ों पर उछल–कूद करने लगा।''

खरगोश फिर खूब गिड़गिड़ाया कि आप मेरे बच्चे को बचाने का प्रयास क्यों नहीं कर रहे हो? इतनी देर में तो शेर उसे खा जायेगा। व्यर्थ में समय क्यों खराब कर रहे हो?

इस बार बंदर को भी क्रोध आ गया, उसने आँख दिखाते हुए कहा– ''चले जाओ यहाँ से! मैं इतनी देर से भाग–दौड़ कर रहा हूँ, उसकी तरफ ध्यान ही नहीं है। मैं इस भाग–दौड़ के अलावा कुछ नहीं कर सकता।''

खरगोश ने देखा, इन तिलों में तेल नहीं है। उसने क्रोधित होकर कहा– ''किस मूर्ख को राजा बना दिया है, जो किसी की सहायता भी नहीं कर सकता है। सच कहा है कि –

''जिसका काम उसी को सोहे, और करे तो मूरख होवे।''

•••

जीवन

★	सर्वोत्तम दिन	: आज
●	सबसे बड़ा धन	: विद्या
★	सबसे उपयुक्त समय	: आज
●	सबसे बड़ा दान	: रक्तदान
★	सबसे बुरी भावना	: ईर्ष्या करना
●	सबसे बड़ी बाधा	: अधिक बोलना
★	सबसे बड़ा मार्गदर्शक	: प्रेरणा देने वाला
●	सबसे बड़ी भूल	: समय की बर्बादी
★	सबसे बुरी आदत	: लोगों की निंदा करना

प्रस्तुति : विकास कुमार 'बंसल'

हजारों साल की आयु का विचित्र पौधा

जानकारी : मिताली जैन

प्रकृति में इतने रहस्य हैं कि सामान्य मनुष्य के लिए अंदाजा लगा पाना भी मुश्किल है। खासतौर से वनस्पति जगत में। दुनिया में पेड़–पौधों की हजारों प्रजातियां पायी जाती हैं और सभी की अपनी अनोखी विशेषताएं होती हैं। ऐसे ही एक पौधे का नाम है – वेलविशिया माइराबिलिश।

वेलविशिया माइराबिलिश की पत्तियां लंबी और चौड़ी होती हैं, जो वेलविशिया को कवर करके 65 डिग्री सेल्सियस के उच्च तापमान में भी न सिर्फ जीवित रहने में मदद करती है, अपितु ठंडक और नमी भी प्रदान करती हैं। इन्हीं पत्तों के सहारे वेलविशिया अपना पूरा जीवन आराम से व्यतीत कर लेता है। इसलिए इसे दुनिया का सबसे प्रतिरोधी पौधा माना जाता है।

अफ्रीका में नामीबिया देश के रेगिस्तान में पाया जाने वाला यह पौधा लगभग 400 से लेकर 1,500 साल तक जीवित रहता है। इसके इतने वर्ष तक जीने के कारण ही इसे विचित्र, अजीब और जीवित जीवाश्म की संज्ञा दी गई है। इस पौधे को खोजने का श्रेय ऑस्ट्रिया के वनस्पति विज्ञानी फ्रेडरिक वेलविश को दिया जाता है, जिन्होंने 1860 में अंगोला के दक्षिणी भाग के नामिब नामक रेगिस्तान में इसकी खोज की। जब फ्रेडरिक ने पहली बार इस पौधे को देखा तो वह इतने आश्चर्यचकित

हुए कि घुटने के बल बैठकर इसे टकटकी लगाए देखते ही रह गए, हालांकि उस समय इसकी सरंचना देखकर वह थोड़े डर भी गए थे। चूंकि फ्रेडरिक वेलविश के प्रयासों के कारण ही विश्व को इस अजीबोगरीब पौधे के बारे में जानकारी मिली, इसलिए अन्य विज्ञानी जोसेफ हूकर ने उनके सम्मान में इस पौधे का नाम वेलविशिया माइराबिलिश रखने का सुझाव दिया।

बदसूरत पौधों में शुमार

जहाँ वेलविशिया फ्रेडरिक वेलविश के नाम से लिया गया है, वहीं 'माइराबिलिश' का अर्थ लैटिन भाषा में अद्‌भुत या असाधारण है। इसकी विशेषता के कारण ही इसे यह नाम दिया गया। हालांकि स्थानीय जगहों पर इसे अलग–अलग नाम से पुकारा जाता है। जहां नामा में यह खुरुब और खारोस के नाम से जाना जाता है, वहीं डमारा में न्यानका और हीरीरो में ऑनयांगा नाम से प्रसिद्ध है। यह दिखने में काफी भयानक होता है, इसलिए इसे दुनिया के सबसे बदसूरत दिखने वाले पौधों में शुमार किया गया है।

यह बारहमासी पौधा है, जिसका तना छोटा और जड़े काफी मोटी होती हैं, जो इसे रेगिस्तान में भी जीवित रखने में सहायक होती हैं। इसके पत्ते सदाबहार, बड़े और चपटे होते हैं। इन्हीं पत्तों की सतह पर वेलविशिया के रंध्र होते हैं। इसके पत्ते की लंबाई लगभग छह मीटर तक होती है। सामान्यतः इसके प्रत्येक शंकु के भीतर केवल एक ही बीज विकसित होता है, जो हवा की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाता है। अंकुरण के बाद बीजपत्रों की लंबाई 25 से 35 मिलीमीटर हो जाती है। बीजपत्रों के निकलने के बाद पत्तों को विकसित होने में लगभग चार माह का समय लगता है।

प्रस्तुति : विद्या प्रकाश

गाँधी जी के तीन बन्दर

महात्मा गाँधी के तीन बंदरों के बारे में कौन नहीं जानता। सभी ने गाँधी जी के इन तीन बंदरों के सम्बन्ध में कुछ न कुछ अवश्य सुना है। मगर यह कम लोगों को पता है कि गाँधी जी के ये तीनों बंदर आये कहाँ से थे।

गाँधी जी के ये तीन बन्दर मूलतः जापानी संस्कृति की देन हैं। वर्ष 1617 में जापान के निक्को स्थित तोगोशु की बनायी गयी समाधि पर ये तीनों बन्दर उत्कीर्ण हैं। हालांकि ऐसा भी माना जाता है कि ये बन्दर बुरा मत सुनो, बुरा मत देखो और बुरा मत बोलो के जिन तीन सिद्धान्तों की ओर संकेत करते हैं, वे मूलतः चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस के हैं तथा आठवीं शताब्दी में ये सिद्धान्त चीन से जापान पहुँचे। उस समय जापान में शिण्टो सम्प्रदाय का बोलबाला था। शिण्टो सम्प्रदाय में बन्दरों को काफी सम्मान प्रदान किया जाता है। सम्भवतः इसीलिए इस विचारधारा को बन्दरों का प्रतीक स्वरुप दे दिया गया। यह यूनेस्को की विश्वविख्यात सूची में सम्मिलित हैं।

इन बन्दरों के नाम मिजारु (बुरा मत देखो), मिकाजारु (बुरा मत सुनो) तथा मजारु (बुरा मत बोलो) हैं।

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. क्रिकेट से 2. कालीकट में 3. अभयघाट 4. मिनट 5. कापर सल्फेट 6. मस्कट 7. अमरकोट 8. एनीबेसेंट 9. राजा विराट 10. बंगाल गजट 11. क्रिकेट में 12. डेनियल फारेनहाइट 13. इंडिया गेट 14. बाइट 15. राजघाट

जानकारीपूर्ण लेख : चाँद मोहम्मद घोसी

कहानी आग और नन्हीं तीली की

कड़ाके की तेज सर्दी से बचाव के लिए दीनू दादा ने अपने खुले आंगन में लकड़ियां जला ली। दीनू दादा बच्चों से अत्यधिक प्यार करते थे। आस–पड़ोस के बच्चे भी उनके निकट आदरपूर्वक नमस्कार करते हुए आकर बैठ गए। उनके हाथ में माचिस देख राजू माचिस मांगने लगा। कैलाश ने बातों–बातों में दादा से पूछ लिया– ''दीनू दादा, बताओ न कैसे बनी तीलियों की यह माचिस?''

''हाँ–हाँ दादा, बताओ ना।'' बच्चे एक स्वर में बोल उठे। प्रेम से सभी बच्चों को दादा ने नजदीक बुलाया और कैलाश के प्रश्न का उत्तर बताने लगे– ''ध्यान से सुनो बच्चों, आज से बहुत समय पहले की बात है। उस समय गुफा अथवा पेड़ों की छाया ही मनुष्य का घर था। बन्दरों की भाँति दौड़ कर वह अपने से छोटे जानवरों पर पत्थर फेंक कर उन्हें मारता था और उनका कच्चा माँस खाकर भूख मिटाता था। कभी–कभी वह कन्दमूल और अन्य फल–फूल भी खाता था।

एक बार अचानक जंगल में आग लग गई। तब आदि मानव ने मजबूर होकर व डरते हुए उसमें जले–भुने किसी जानवर का मांस खाया तो उसे बहुत स्वादिष्ट लगा, लेकिन आग जलाना उसे नहीं आता था।

एक दिन एक मानव जानवरों को मारने के लिए धड़ा–धड़ पत्थर फेंक रहा था। उसने उन पत्थरों को आपस में टकराते हुए देखा जिनमें से चिंगारियां निकल रही थीं। उस समय उसके दिमाग में आया कि एक पत्थर को दूसरे पत्थर पर रंगड़ कर आग पैदा की जा सकती है।

उसके बाद वह आपस में कठोर पत्थरों को रगड़ कर आग जला कर उसमें मांस को सेक कर खाने लगा। जंगली जानवरों को आग की

लपटों से डरा कर अपनी हिफाजत करने लगा और सर्दी में आग के पास बैठ कर शरीर को तापने लगा। आग के प्रकाश में मानव को रात्रि में भी दिखाई देने लगा। हिंसक जानवरों को दूर भगाने में भी मदद मिलने लगी। तब वह कई दिनों तक आग को लगातार जलाए रखने लगा। आग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए मानव ने आवश्यकतानुसार नये–नये प्रयोग करने शुरू कर दिये।

कई शताब्दियां गुजर गईं। 19वीं शताब्दी के आरम्भ में एक फ्रांसीसी ने एक आविष्कार किया जिसे वह 'तुरन्त प्रकाश की डिबिया' कहता था। उसने लकड़ी की तीलियों को एक रासायनिक मिश्रण में डुबोया। वह ''माचिस'' कुछ रसायनों से भरी बोतल में डुबाने से जलती थी। उसे जेब में रख कर ले जाने पर अम्ल के कपड़ों पर गिर जाने से कपड़ों में आग भी लग जाती थी। इससे निजात पाने के लिए नई माचिस की डिब्बी का आविष्कार सन् 1827 में जॉन वाकर ने इंग्लैण्ड में किया जिसका नाम उसने 'लूसिफर' रखा।

'लूसिफर' में रेजमाल के दो टुकड़ों के बीच जब मिश्रण युक्त तीली का सिरा तेजी से खींचा जाता तो वह मिश्रण आग पकड़ लेता और तीली जलने लगती।

उसके तीन साल बाद एक फ्रांसीसी चार्ल्स सॉरिया ने 'लूसिफर' में परिवर्तन करके तीली के सिरे पर लगे मिश्रण में कई और रसायन मिलाये जिससे माचिस की तीली किसी भी खुरदरी सतह पर रगड़ने से जलने लगती। यह आविष्कार खतरनाक साबित हुआ क्योंकि जेब के अन्दर रखी माचिस की तीलियां हिलने से एक–दूसरे से रगड़ खाकर आग पकड़ लेती थी।

सालों तक इसी माचिस का उपयोग होता रहा। फिर इसमें नया सुधार करके 'सेफ्टी माचिस' का नाम दिया गया। वह आग तभी पकड़ती है जब उसकी तीलियों को एक विशेष सतह पर घिसा जाए। 'सेफ्टी माचिस' की लकड़ी की पतली तीली के सिरे पर कुछ रसायनों के मिश्रण का छोटा–सा गोला लगाया जाता है जो लाल फासफोरस से

पुती सतह (माचिस के बक्से के दोनों ओर की भूरि पट्टी) पर रगड़ने से जलता है।

रगड़ की सतह को अधिक खुरदरी बनाने के लिए आजकल माचिस की पट्टी वाले स्थान पर लाल फासफोरस के बिन्दु बनाने लगे हैं। बच्चों, ध्यान देने योग्य बात यह है कि जलती हुई माचिस की तिल्ली को लापरवाही से इधर–उधर ज्वलनशील वस्तु पर फेंक देने से वहाँ आग लग सकती है, दुर्घटना हो सकती है, अतः ऐसा नहीं करना चाहिए।

हाँ तो नन्हे–मुन्ने बच्चों, समझ में आ गया कि कैसे बनी तीलियों की माचिस? चलो अब तो अपना ईंधन भी समाप्त हो गया। आग भी बुझ गई। मुझे मन्दिर जाने में विलम्ब हो रहा है और तुम्हारे विद्यालय जाने का समय हो रहा है।

दीनू दादा की यह बात सुनकर सभी बच्चें खुशी–खुशी वहाँ से उठ कर अपने गन्तव्य स्थान की ओर चले गए। ●

ताकि दीपावली का मजा किरकिरा न हो आतिशबाजी के पूर्व कुछ सावधानियाँ

★ आतिशबाजी छोड़ते समय सूती वस्त्र ही धारण करो।

★ आतिशबाजी छोड़ते समय ढीली–ढाली पोशाक न पहनो।

★ घर में 'फर्स्ट एड बॉक्स' पर एक नज़र पहले ही जरूर डाल लें।

★ घर में आतिशबाजी को छोड़ते समय अपने से बड़े लोगों को साथ ले लो। वैसे आतिशबाजी हमेशा घर के बाहर ही छुड़ाना चाहिए।

★ जेब में भूलकर भी आतिशबाजी न रखें और न ही फुस्स हो चुके किसी आइटम को दुबारा सुलगाने का प्रयास करें।

★ घर में बालू से भरी बाल्टी (सैंड बकेट) सावधानी के लिए रख सकते हैं। साथ ही पानी भरी बाल्टियाँ भी। अचानक लगी आग को बुझाने में काफी मददगार हो सकता है।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा

पढ़ो और हँसो

रात को ठक–ठक की आवाज सुनकर घर का मालिक जाग गया।
बोला – कौन है भाई?
दूसरी ओर से आवाज आई – चोर।
मालिक बोला – ठहर जा भाई, दिन में तो मुझे यहाँ कुछ मिलता नहीं। शायद तेरे साथ ढूंढने से कुछ मिल जाए।

शारदा : लोग कहते हैं कि दिन में देखा सपना सच नहीं होता। पर मेरा तो कल दिन का सपना सच हो गया।
निष्ठा : कैसे?
शारदा : कल दोपहर में क्लास में सोते–सोते सपना देख रही थी कि मेरी पिटाई हो रही है। जब मैं उठी तो सच में मेरी पिटाई हो रही थी।

सुशील : (रामू को) कई कुत्ते अपने मालिकों से ज्यादा समझदार होते हैं।
रामू : तुम्हें कैसे मालुम पड़ा।
सुशील : तुम्हारे कुत्ते को देखकर।

पापा : बिनी बेटे! क्या तुम गर्म मसाला नहीं लाए?
बिनी : पापा जी मैंने हाथ लगाकर देखा तो वह ठण्डा था।

एक व्यक्ति को कुछ न कुछ मांगने की आदत थी। वह एक पड़ोसी के घर जाकर बोला– जरा अपना टेबलफैन देना, मेरा खराब हो गया है।
पड़ोसी बोला – जी नहीं, आज मेरी छुट्टी है, मैंने कहीं बाहर नहीं जाना, बस घर में ही पढ़ना–लिखना है।
वह व्यक्ति बोला – तो अच्छा फिर अपना स्कूटर ही दे दें, आपने तो कहीं जाना नहीं है।

– आर्यन (हरदेव नगर, दिल्ली)

राजेश : अंकल, मेरे पापा कह रहे हैं कि क्या आप एक दिन के लिए अपना हारमोनियम देंगे?
पड़ोसी : क्यों नहीं बेटा, पर क्या आज रात आपके घर में संगीत गोष्ठी है?
राजेश : नहीं अंकल, आप से हारमोनियम लेकर आज रात आराम की नींद सोना चाहते हैं।

वकील : (अपराधी से),चाकू पर तुम्हारी उंगलियों के निशान पाए गये हैं। खून तुमने ही किया है।
अपराधी : वकील साहब! आप कैसे कह सकते हैं कि चाकू पर मेरी उंगलियों के निशान पाए गये हैं...? खून करते समय मैंने तो दस्ताने पहन रखे थे।

नीतू : (नवीन से) जब तुम तेजी से कार चलाते हुए 'ट्रेनिंग' लेते हो तो मुझे बहुत डर लगता है कि कहीं टक्कर न लग जाए।
नवीन : बेवकूफ डरा मत करो। ऐसे मौके पर मेरी तरह तुम भी आँख बंद कर लिया करो। — गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

अध्यापक : (कक्षा में), बच्चों बताओ कि दूध को खराब होने से बचाने के लिए क्या करना चाहिए?
छात्र : उसे पी लेना चाहिए।

डॉक्टर : (बच्चे से) जीभ दिखाओ।
बच्चा : नहीं दिखाऊँगा। बड़ो को जीभ दिखाने पर पिताजी डांटते हैं।

गीता : (प्रभा से) आजकल तुमने गाने का अभ्यास क्यों बन्द कर दिया?
प्रभा : अपने गले की वजह से।
गीता : क्यों क्या हुआ तुम्हारे गले को।
प्रभा : पड़ौसी ने दबाने की धमकी दी है।

पत्नी : मैंने हलवा बहुत परिश्रम से बनाया है।
पति : और मैंने उसे खाया भी बहुत परिश्रम से है। तूने चीनी की बचत जो की है उसमें नमक डालकर।

— प्रवीण कुमार (दिल्ली)

♣ ♣ ♣

अगस्त अंक रंग भरो परिणाम

प्रथम :	हर्षित सुनेजा 229, हौज रानी दिल्ली	आयु 14 वर्ष
द्वितीय :	खुश वधवा 2975, सराफा बाजार नकोदर (पंजाब)	आयु 12 वर्ष
तृतीय :	कुलदीप गुप्त 9, एफ.एच.– 3, 20 ओबरा, सोनभद्र	आयु 13 वर्ष

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसंद किया गया वे हैं –

सिमरन कोहली, दिव्या कोहली (मराण्डा), सिमरन गुगलानी (हस्तिनापुर), तुषार कुमार (अफजलगंज), दीक्षा कुमारी (देहरा), हर्षित रावत (कोटी), शिवांश (कुरुक्षेत्र), कर्ण (सिंदेवाही), अनुष्का चौबे (नंदलाल बोस लेन, कोलकाता), प्रथम शर्मा (झड़ोदा दिल्ली), नित्या जगर (बारापत्थर), पुरुषोत्तम कुमार (बद्दी), पूजा (रईया), संजीव कुमार (निरंकारी कालोनी, दिल्ली), श्रेय (टोहाना), करिश्मा आहूजा (पाण्डव रोड, दिल्ली), हार्दिक गुप्ता (लोगोंवाल)।

अक्टूबर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर–सुन्दर रंग भर कर **15 अक्टूबर तक सम्पादक 'हँसती दुनिया', सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09** को भेज दें। तीन सर्वश्रेष्ठ प्रविष्ठियां भेजने वालों के नाम प्रकाशित किये जाएंगे।

प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वालों के नाम दिसम्बर अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पूरा पता (पिनकोड सहित) साफ–साफ अवश्य भरें। इसमें 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही हिस्सा ले सकते हैं।

रंग भरो

नाम .....आयु.....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड.....

आवश्यक सूचनाएं

हँसती दुनिया (मासिक) को आप घर बैठे ही मंगवा सकते हैं। इसका वार्षिक शुल्क भारत के लिए 100/–रुपये, त्रैवार्षिक 250/–रुपये, दस वर्ष के लिए 600/–रुपये एवं आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता शुल्क 1000/–रुपये हैं तथा विदेशों के लिए शुल्क की दरें पृष्ठ 1 पर देंखे। यह शुल्क आप नीचे लिखे पते पर मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/चैक या नेटबैंकिंग द्वारा अपने मोबाइल नं. सहित निम्न पते पर भेजें–

पत्रिका विभाग, (हँसती दुनिया)
सन्त निरंकारी मण्डल, निरंकारी कालोनी, दिल्ली–09

नोट : चैक/ड्राफ्ट केवल सन्त निरंकारी मण्डल के नाम दिल्ली में देय होने चाहिए।

- नेट बैंकिंग की डिटेल HDFC Bank A/c No. 50100050531133 NEFT/RTGS IPSC Code— HDFC 0000651 है। इसमें आप नगद अथवा चैक/ड्राफ्ट आदि भी जमा करा सकते हैं।
- जब भी आपका पता बदले तो पता बदलवाने के लिए पुराना व नया दोनों पूरे पते साफ–साफ व स्पष्ट अक्षरों में लिखें। चिट संख्या भी देंगे तो सुविधा होगी।
- अगर आप पहले से ही पत्रिका के सदस्य हैं तो पत्रिका का बकाया चन्दा भेजते समय भी कृपया अपना चिट नम्बर अवश्य लिखें।
- जिस लिफाफे में आपको पत्रिका मिलती है उसके ऊपर जहाँ आपका पता लिखा होता है, वहीं पर शुरू में आपका चिट नं. भी छपा होता है, उसे कृपया नोट कर लें। यदि आपको पत्रिका न मिलने की सूचना देनी हो तो वह चिट नं. भी साथ लिख दिया करें। इससे कार्य में सरलता हो जाती है।
- पत्रिका से सम्बन्धित कोई भी शिकायत या जानकारी प्राप्त करनी हो तो आप 011–47660360 पर फोन कर के या E-mail: patrika@nirankari.org द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कविता : राजेन्द्र निशेश

दीपों का त्यौहार

दीपक लड़ता अंधियारे से, यह उसकी पहचान,
लड़ना उससे सीख लो, मिट जाते व्यवधान।

अंधियारा कितना घना, नहीं ठहरता पास,
जीत दीप की अटल है, मन में हो विश्वास।

दीवाली पर सज रही, दीपों की बारात,
खुशियां सब को मिल रहीं, मिलती सब सौगात।

पूजा की थाली सजे, कुमकुम फूल मिठाई,
हर आंगन में देख लो, छम–छम खुशियां आईं।

धूम–धड़ाके हो रहे, हँसते खूब अनार,
रंग दिखाने को खड़ीं फूलझड़ियां तैयार।

ऊँच–नीच का भेद सब, मिट जाये इस बार,
यही सीख है दे रहा, दीपों का त्यौहार।

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

बालवन में दीपावली

मनुष्यों के रीतिरिवाजों, उत्सवधर्मिता का व्यापक प्रभाव पशुओं पर भी दृष्टिगोचर होने लगा था। बालवन के अधिकांश पशुओं की इच्छा थी कि जैसे उन्होंने अभी कुछ दिन पूर्व दशहरा उत्सव मनाया है। वैसे ही दीवाली मनाने की परंपरा शुरू होनी चाहिए।

वन सम्राट शेरसिंह जी ने पशुओं की इस चाहत का सम्मान करते हुए एक सभा आयोजित कर डाली ताकि उसका स्वरूप तय हो सके। सभा में शेरसिंह ने कहा– "जिस प्रकार हमारा प्रभाव मनुष्य जाति पर पड़ रहा है वैसे ही मनुष्यों का प्रभाव हम पर पड़ रहा है। यह कोई असामान्य बात नहीं लेकिन इतना याद रहे कि नकल में हम अपनी पहचान व संस्कृति को विस्मृत न कर डालें।

गजराज बोले, "यह सबको पता है महाराज, दशहरा पर्व के समय भी आपने यह मंतव्य प्रकट किया था।"

"अच्छा अब पशुगण सुझाव दें कि वे किस प्रकार इस पर्व को मनाना चाहते हैं।" – शेरसिंह ने सबकी ओर उन्मुख होकर पूछा।

"हुजूर यह पर्व दीपों का है इसलिए संपूर्ण वन को रोशनी से जगमगा दिया जाए।" – लाली लोमड़ी की ओर से पहला सुझाव आया। '

"रोशनी अवश्य होनी चाहिए, वन का प्रत्येक कोना जगमगाना चाहिए और इतना ध्यान रहे कि किसी के घर में अंधेरा न रह जाए"– शेर सिंह ने अपेक्षा व्यक्त की।

"यह पर्व उल्लास और खुशी का है इसलिए खूब आतिशबाजी की जाए" – सिब्बू सियार ने सुझाव दिया।

"ठीक है अपनी प्रसन्नता प्रकट की जाए लेकिन पटाखों से इतना शोर न किया जाए कि बूढों और बच्चों को परेशानी उत्पन्न हो।"– शेर ने कहा।

"बिना पकवान के यह पर्व अधूरा लगता है। इसलिए इस अवसर पर खूब मिठाई–पकवान बनाएं जाएं।" बब्बन भालू ने लार टपकाते हुए कहा।

"ठीक है– खूब मिठाई–पकवान बनाएं जाएं।"– शेरसिंह ने सहमति व्यक्त की।

"आपकी दी हुई हिदायतों का पूरी तरह पालन किया जाएगा, आप निश्चित रहें महाराज।"– गजराज ने आश्वस्त किया।

"अब मेरी खास बात सुनो... अवश्य ही त्यौहार खुशियां मनाने के लिए होते हैं लेकिन इतना ध्यान रहे इसे वैभव प्रदर्शन का अवसर न बनाया जाए। मतलब कि यह नहीं होना चाहिए कि जो जितना सम्पन्न हो वह उतने ज्यादा दीप, पटाखें जलाए, मिठाईयां–पकवान बनाए, उतने ज्यादा नये कपड़े बनवाएं।"– शेरसिंह बोले।

"फिर हजूर आप बताइए कितना क्या किया जाए?" अज्जू अजगर ने पूछा।

शेरसिंह ने बताया– "एक बात कहना चाहता हूँ, आप जितने दीपक अपने घर पर जलायेंगे उसके आधे पड़ोसी के घर जलाएं, आप जितने पटाखे चलायेंगे उसके आधे पड़ोसियों में बांटें, आप कितने भी

पकवान बनाएं उसके आधे पड़ोसियों में बंटना चाहिए... तात्पर्य यह है कि प्रत्येक बात की खुशी का आधा हक पड़ोसी का रहेगा।

शेरसिंह की बात का विरोध करने का साहस किसी में नहीं था इसलिए सारे पशुगण खामोश रहे।

"एक आखिरी बात और... इस वर्ष जिसका कोई झगड़ा या विवाद हुआ तो वह अपनी शत्रुता भुलाते हुए उसके डेरे पर मिलने अवश्य जाए...। अगर ये सारी बातें आपको स्वीकार्य हो तो दीवाली का त्यौहार मनाया जा सकता है।" – शेर सिंह ने कहा। उपस्थित समस्त पशुओं ने हर्षध्वनि कर अपनी सहमति की मोहर लगा दी।

शेरसिंह ने उठते हुए घोषणा की– "मुख्य कार्यक्रम हमारे शाही महल में होगा। शाही भोज में आप सब सादर आमंत्रित हैं... अब आप त्यौहार धूमधाम से मनाने की तैयारियां शुरू कीजिए।

बाल कविता : दिनेश राय

कार!

अंकुर गया कल बाजार
देखी उसने वहाँ पे कार।
बोला वह बिन सोच–विचार,
मम्मी लूंगा मैं ये कार।

मम्मी बोली करके प्यार।
बेटे ज़िद मत कर बेकार।
पहले बड़ा हो जा तूं।
गाड़ी लेकर तब ये दूँ।।

बोधकथा : महेन्द्र सिंह शेखावत 'उत्साही'

महान् कौन ?

दीपावली का समय। चारों ओर दीपक ही दीपक झिलमिला रहे थे। तभी उनमें से एक दीपक बोला– ''देखो, मैं अंधेरे को दूर करके प्रकाश फैला रहा हूँ।''

इतना सुनते ही दीपक में जल रही बत्ती बोली, ''दीपक भैया, प्रकाश तो मैं फैला रही हूँ, देख लो मैं ही जल रही हूँ।''

बत्ती की बात सुनकर तेल झट से बोल पड़ा– ''बत्ती, तुम भी मेरे बिना नहीं जल सकती! तुम मेरे माध्यम से ही जल कर प्रकाश फैला रही हो, इसलिए तुम से मैं महान् हूँ।''

इस प्रकार तीनों आपस में बहस करने लगे। दीपक कहने लगा– ''मैं महान् हूँ, मेरे बिना तुम्हारी कोई सार्थकता नहीं, तो तेल और बत्ती भी अपने आपको महान् कहने लगे।

उनकी बातें सुनकर मिट्टी बोली– ''दीपक, तुम महान् हो क्योंकि तुमने तेल और बत्ती दोनों को आश्रय दे रखा है, लेकिन मेरे बिना तुम्हारा भी अस्तित्व नहीं हो सकता। इसलिए अपनी–अपनी जगह सभी का महत्व होता है और अपनी–अपनी जगह सभी महान् होते हैं। यदि हम सब आपस में एक–दूसरे का सहयोग ना करें तो यह प्रकाश उत्पन्न नहीं हो सकता। प्रकाश के लिए हमारा आपस में सहयोग नितांत आवश्यक है।

अब मिट्टी की बात सुनकर सब चुप हो गये थे।

बाल कविता :
महेन्द्र सिंह शेखावत

दीपक हूँ मैं

दीपक हूँ मैं
बड़ा निराला,
त्याग–समर्पण
का मैं प्याला।

जल कर देखो
करूँ उजाला,
दूर करूँ मैं
तम जो काला।

देता हूँ मैं
सबको प्रकाश,
मन में सबके
जगाऊँ आस।

ये हरियाली का सागर और प्राकृतिक नज़ारा मुझे बहुत अच्छा लगता है।
– तरेश (करमाला)

मुझे तो बाल्टी में नहाना अच्छा लगता है।
– श्रेय थदानी (वर्धा)

मेरी कुर्सी देखो कितनी सुन्दर है। इस पर बैठकर मुझे अच्छा लग रहा है।
– सेजल (अमृतसर)

आओ फुटबाल खेलें, खेलने से सेहत अच्छी रहती है।
– हार्दिक (सरदाहेड़ी)

मेरी टोपी और ड्रेस देखो, लाजवाब है न।
– मुस्कान मलिक (यमुनानगर)

ड्रेस तो मेरी भी लाजवाब है।

फोटो फीचर

मेरा सफेद रंग का यह चेतक घोड़ा हवा से बातें करता है।

कमाल का है तुम्हारा ये चेतक घोड़ा, मैं भी घोड़े पर बैठूंगी।

ठहरों घोड़े पर बैठने मैं भी आ रहा हूँ।

अरे रे सावधानी से बैठना घोड़े पर, कहीं ये तुम्हें गिरा न दे।

मेरी ये लाल रंग की ड्रेस देखो, कितनी सुन्दर है।

मुझे देखो, मैं तो लाल पीली छतरी लगा कर कब से आराम से यहाँ बैठा हूँ

प्रस्तुति : डॉ. तारा निगम

कहानी

दादी कहती
एक कहानी
दादा कहते
दो।
नफ़रत न हो
कभी किसी से,
सबमें प्यार?
भर दो।।

दादी कहती
तीन कहानी,
दादा बोले
चार।
झूठ से हरदम
दूर रहो,
करो नेक
व्यवहार।।

दादी कहती
पांच कहानी,
दादा कहते
छह।
हिम्मत से
बढ़ते ही जाओ,
मुश्किल जाये
ढह।।

दादी कहती
सात कहानी,
दादा बोले
आठ।
देश की
इज्जत करो
पढ़ो फिर
देश प्रेम का
पाठ।।

दादी कहती
नौ कहानी,
दादा कहते
दस।
सबक सीख
पहले फिर गोलू,
खिलखिल खिलखिल
हँस।।

कहानी : दर्शन सिंह आशट (डॉ.)

मित्र की पहचान

रिम्पी और बलदेव एक ही कस्बे में रहते थे। दोनों अलग–अलग स्कूलों में आठवीं कक्षा में पढ़ते थे। उनके घर भी ज्यादा दूर नहीं थे। शाम को वे कस्बे के बाहर एक खुले मैदान में आ जाते और जमकर कुश्ती खेलते। यही दोनों का एकमात्र पसंदीदा खेल था।

रिम्पी के पिताजी एक अधिकारी थे जबकि बलदेव के पिताजी एक साधारण किसान थे। बेशक बलदेव की स्कूल में आधी फीस माफ थी लेकिन फिर भी उसे पढ़ाना बलदेव के माता–पिता के लिए बहुत कठिन था। बलदेव हर वर्ष ही अगली कक्षा में जाकर पुरानी पुस्तकें खरीदकर पढ़ता था।

इस वर्ष जब बलदेव आठवीं कक्षा में दाखिल हुआ तो गणित, अंग्रेजी, कम्प्यूटर और विज्ञान की पुस्तकें पाठ्यक्रम में नई लगी थीं।

एक दिन शाम को जब बलदेव के पिताजी घर लौटे तो वह उनके लिए पानी का गिलास लाया। उनके पानी पीकर बैठने के बाद बलदेव

बोला– पिताजी, मुझे नई पुस्तकें खरीदने के लिए दो सौ रुपयों की जरूरत है।

–दो सौ रुपये?– बलदेव के पिताजी चौक पड़े।

–हाँ पिताजी, मुझे चार पुस्तकों की जरूरत है। ये पुस्तकें हमें नई लगी हैं।

– कहीं से पुरानी नहीं मिल सकती। अभी कुछ दिन पहले तो मैंने तुम्हें वर्दी सिलवाकर दी है। स्कूल की फीस भी दी है और ऊपर से आज दो सौ रुपये एकदम कहाँ से लाकर दूँ? –बलदेव के पिताजी चिन्ता भरे स्वर में बोले।

इतने में बलदेव की माताजी बोली– मेरे कानों की झुमकियां बेटे की पढ़ाई के मौके पर काम नहीं आ सकती तो फिर कब आएंगी? आप इन्हें बेचकर बलदेव की पुस्तकों का बंदोबस्त करें।

– ठीक है, कल शाम को जल्दी आ जाऊंगा और फिर दोनों मिलकर श्यामू सुनार की दुकान पर चलेंगे।– बलदेव के पिताजी बोले और फिर नहाने की तैयारी करने लगे।

अगले दिन रिम्पी के स्कूल में आसपास के दस स्कूलों के विद्यार्थियों की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन था। सभी विद्यार्थी खूब मेहनत कर रहे थे। हर कोई चाहता था कि उसके स्कूल का नाम ऊँचा हो। प्रत्येक खेल में जीतने वाले खिलाड़ी को दो सौ रुपये का नकद ईनाम दिया जाना था। तीस से पैंतीस किलोग्राम वजन वाले खिलाड़ियों में बलदेव और रिम्पी भी शामिल थे।

बलदेव अपने स्कूल की तरफ से कुश्ती लड़ने की तैयारी कर रहा था। दूसरी तरफ उसने रिम्पी को अपने स्कूल की तरफ से अपने ही साथ कुश्ती लड़ने के लिए कपड़े उतारते देखा तो बलदेव ने सोचा कि वह अपने कपड़े पहन ले क्योंकि उसे हराना सरल नहीं था। लेकिन अपने स्कूल की इज्जत का सवाल था। इसलिए वह मैदान में आया और वह भी डंड पेलने लगा। बलदेव मन ही मन डर रहा था कि रिम्पी उसे पहली बार में ही चित्त कर देगा और हो–हल्ला मच जाएगा।

ज्यों ही रेफरी ने सिटी बजाई। दोनों की कुश्ती शुरू हो गई। दोनों आपस में गुत्थम–गुत्था हो गये। पूरा जोर लगाकर रिम्पी ने बलदेव को

कंधे पर उठा लिया।

–कर दे चित्त; लगा दे इसका कंधा।– ऐसी कई किस्म की आवाजें लगातार आने लगीं।

लेकिन यह क्या? रिम्पी का अचानक संतुलन बिगड़ गया और खुद गिरता–गिरता बचा। तब तक बलदेव ने मौका संभाल लिया और रिम्पी को नीचे गिरा दिया। अब कभी रिम्पी नीचे होता तो कभी बलदेव।

अचानक ही बलदेव ने रिम्पी को चित्त कर दिया।

–शाबाश बलदेव, शाबाश!– की आवाजें ऊँची होने लगीं। बलदेव के एक दो और दोस्तों ने उसे उठाकर अपने कंधे पर बैठा लिया और चक्कर काटने लगे। बलदेव ने दो सौ रुपये का नकद ईनाम जीत लिया था।

बलदेव को विश्वास नहीं आ रहा था कि उसने रिम्पी को चित्त कर दिया है। उस के मन में उधेड़बुन थी। शाम को वह इसी उधेड़बुन में रिम्पी के घर गया। वह अपने घर में ही था।

–आओ बलदेव, बधाई हो! आज तो तूने कमाल कर दिया यार। इतनी शक्ति तुम्हारे अंदर कैसे हो गई? मैंने तुम्हें चित्त करने की पूरी कोशिश की लेकिन यार तुम तो पता नही कहाँ से कमाल के दांव–पेंच सीख कर आए थे? कमाल कर दी तूने तो?–

–रहने दो रिम्पी, इन बातों को– बलदेव बोला– अच्छा ये बताओ कि तुम्हारा सबसे प्यारा मित्र कौन है?

–तुम– रिम्पी बोला। – फिर मेरी कसम खा कर बताओ कि क्या तुम आज मुझसे जान–बुझ कर नहीं हारे?– बलदेव ने पूछा।

यह सुनते ही रिम्पी का रंग एकदम बदल गया। मानो उसकी चोरी पकड़ी गई हो। रिम्पी को कुछ न सूझा।

–चोर पकड़ा गया न?– बलदेव ने उसके हाथ पर हाथ मार कर कहा।

अब रिम्पी से रहा न गया। वह बोला– बलदेव, सच्ची बात तो यह है कि मैं कल तुम्हारे घर गया था। जब मैं अंदर दाखिल हुआ था तो तुम्हारी माताजी तुम्हारी पुस्तकें खरीदने के लिए अपनी झुमकियां बेचने

की बात कर रहे थे। मैंने उनकी बातें सुन ली थी और दबे पांव वहीं से वापिस लौट आया था। आज कुश्ती के दौरान मैंने सोचा कि इस समय दो सौ रुपये की मुझे नहीं, तुम्हें बहुत सख्त जरूरत है। इसलिए मैंने तुम से हारना ठीक समझा।

यह सुनकर बलदेव की आंखें छलक उठीं। वह रिम्पी का हाथ पकड़कर बोला– रिम्पी, तुम हार कर भी जीत गये हो।

रिम्पी ने बलदेव को गले लगा लिया।

सच्चा आनन्द

★ सदैव मुस्कान – सुखी जीवन का वरदान।

★ कष्ट एवं विपत्तियां मानव को साहस देकर महान बनाती हैं।

★ आवश्यकतायें घटायें – अधिक सुख पायें।

★ स्वच्छता ही स्वस्थता की निशानी है।

★ जब होगा आजादी का ज्ञान, तभी बनेगा देश महान।

★ बच्चों का भविष्य उनकी शिक्षा पर आधारित है।

★ बड़ों व विद्वानों का आदर करने से शुभाशीष मिलती है जो प्रगतिकारक होती है।

★ आनन्द वह खुशी है – जिसको भोगने पर पछताना नहीं पड़ता।

★ क्रोध रूपी तलवार के वार का – धैर्य रूपी ढाल से बचाव करें।

★ धन लेकर किया गया न्याय – न्यायकर्त्ता को सुखी नहीं रहने देता।

★ माँ की ममता एवं राष्ट्र का सम्मान करें।

★ आलस्य त्यागकर समय का सदुपयोग करें।

★ जीवन के लिए धन से ज्यादा व्यवहारिक बनें।

★ धैर्य रखें व संतोष प्राप्त करें।

★ परिवार व समाज से राष्ट्र बड़ा है।

★ विश्व में भारत का नाम रोशन करें।

★ आत्मविश्वास व ईमानदार मेहनत बिना जीवन अधूरा है।

★ अति – अन्त का प्रतीक है।

संग्रहकर्ता – सच्चानन्द चेलानी

हँसते हँसते ज्ञान बढ़ाती, हँसती दुनिया मन को भाती।
हँसती दुनिया खूब हँसाती, ज्ञान की बातें हमें बताती।।

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे यह बाल पत्रिका बहुत ही अच्छी लगती है तथा मैं इसे बड़े चाव से पढ़ता हूँ। इस पत्रिका में 'भैया से पूछो', 'कभी न भूलो' और 'पढ़ो और हँसो' मुझे बहुत पसन्द हैं।

इसमें कहानियां हमें अच्छी बातें समझाती हैं तथा मन–भावन कविताएं हमारे मन को लुभाती हैं। इस पत्रिका से बच्चों का सही मार्गदर्शन व मानसिक विकास होता है।

(एक पाठक)

हमारी प्यारी हँसती दुनिया आती है तो ढेर सारी कहानियां, कविताएं और जानकारियां लाती हैं। सारी ही पत्रिका हम बड़े चाव से पढ़ते हैं।

हँसती दुनिया पढ़कर सत्य बोलने व माता–पिता का कहना मानने व बड़ों का आदर करने की प्रेरणा मिलती है। भगवान करे यह पत्रिका और अधिक तरक्की करे।

– प्रमोद (जयपुर)

जीवन का हर पल खुशियों से भरने वाली यह बाल पत्रिका सभी को एक नया मार्गदर्शन देती है यह पत्रिका बड़े लोगों को भी बहुत प्रिय है। यह पत्रिका कहानियों द्वारा शिक्षा भी प्रदान करती है।

मुझे इसमें कई बातें अच्छी लगती हैं जैसे 'सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी', से सामान्य ज्ञान बढ़ता है। कहानियां ज्ञानवर्द्धक होती हैं। मुझे इस पत्रिका का हर माह इंतजार रहता है।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

– मैं हँसती दुनिया की पुरानी पाठक हूँ। मुझे यह पत्रिका बहुत अच्छी लगती है। इसमें 'भैया से पूछो', 'कभी न भूलो' तथा कहानियां ज्ञानवर्द्धक होती हैं। मेरी इस पत्रिका को शुभकामना है कि यह पत्रिका इसी तरह हमारा ज्ञानवर्द्धन करती रहे। – कमल कान्त (मुम्बई)

मैं हसती दुनिया का आजीवन सदस्य हूँ। इस पत्रिका को मैं बड़े चाव से पढ़ता हूँ। हँसती दुनिया से बच्चों का बौद्धिक विकास होता है। मैं अपने भाईयों के बच्चों को तथा सभी पड़ोसियों को भी पढ़ाता हूँ।

– दीपक (उज्जैन)

वर्ग पहेली के उत्तर

1 मै	2 सू	र			3 चि
	डा		4 भा	र	त
5 न	न	6 दो	ई		रं
ख		बी		7 बी	ज
8 रा	9 ज	घा	10 ट		न
	मै		11 का	12 ला	
13 इ	का	ई		14 ल	हू

TU HI NIRANKAR

SUPER Aqua®

AN ISO 9001:2000 Certified Company.

SALE-SERVICE & AMC WATER PURIFIER SYSTEM

पानी की शुद्धता सेहत की सुरक्षा
दूषित एंव खारे पानी को मिनरल बनायें

पेश है, **Super Aqua** एक ऐसा प्यूरिफायर जो न केवल आधुनिक तकनीक से पानी को स्वच्छ करता है, बल्कि उसे फिल्टर होने के बाद लम्बे समय तक रखने के लिए सक्षम बनाता है। यह सम्भव होता है एक खास किस्म के **U.V.** चैम्बर से। जब पानी इस काटरेज से गुजरता है तो उसमें एक विशेष किस्म का बैक्टीरिया विरोधक तत्व मिल जाता है जो पानी को लम्बे समय तक रखने और पीने योग्य बनाता है।

तो ध्यान रहे पीने के पानी में कोई लापरवाही न बरते, सिर्फ **SUPER AQUA** ही अपनाएँ।

SUPER AQUA®
R.O. System

Manufacturer :

Wholesale & Retailer of all type of
Water Purifier & R.O. System

Free Demo Water Testing

स्वच्छ पानी, स्वच्छ जीवन

For Contact 09910103767
Customer Care : 09971830830

आसान किस्तों पर उपलब्ध
0% FINANCE

Delhi Off. G-3/115, Ground Floor Sec-16, Rohini, Delhi-85
Nr. Mother Dairy
Head off. Flat No. 302, C-Wing, Parth Complex, Nr. T.V Tower
Badlapur (East) Thane, Maharashrta, (M) 09930804105

Email : superaqua1@gmail.com

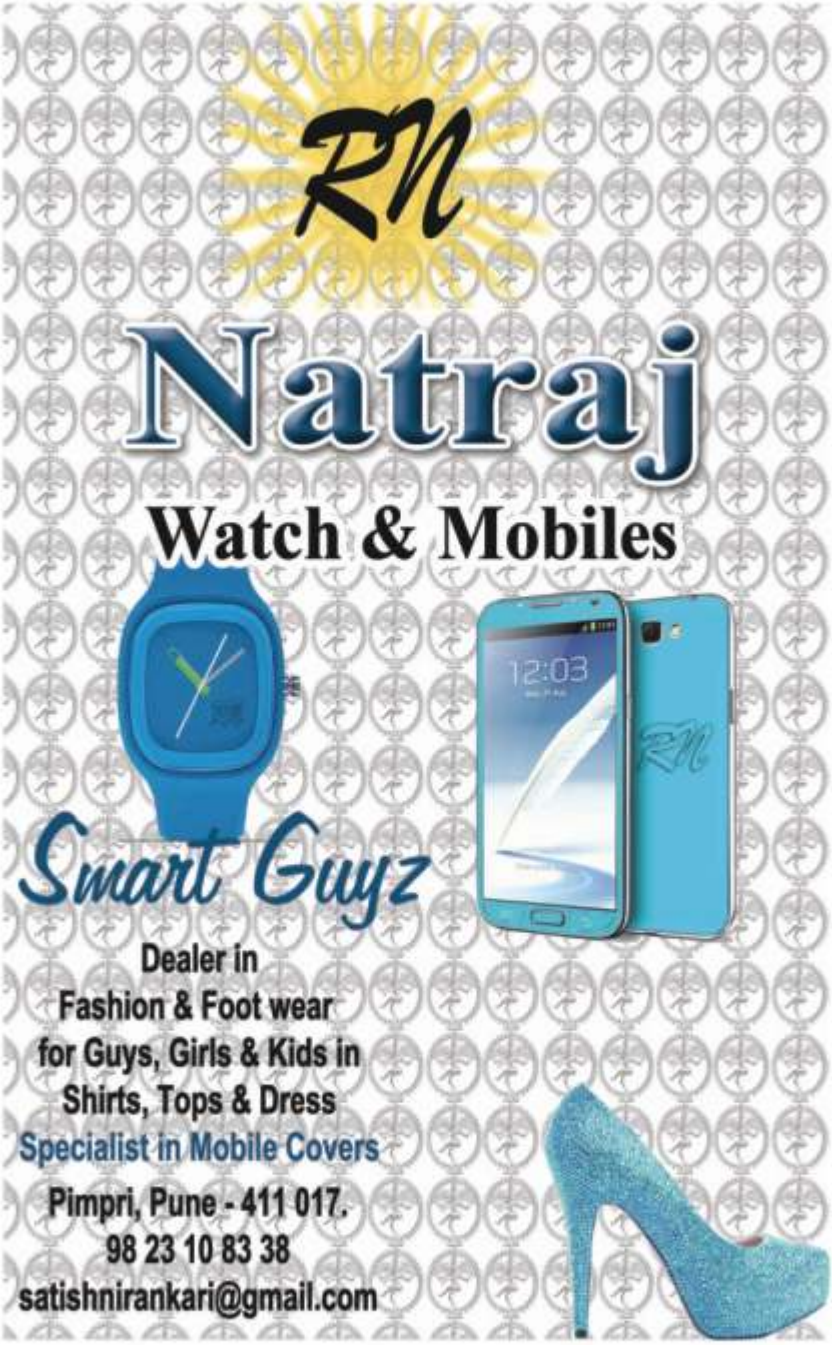
RN
Natraj
Watch & Mobiles
Smart Guyz
Dealer in
Fashion & Foot wear
for Guys, Girls & Kids in
Shirts, Tops & Dress
Specialist in Mobile Covers
Pimpri, Pune - 411 017.
98 23 10 83 38
satishnirankari@gmail.com

Dhan Nirankar Ji

V.P. Batra
+91-9810070757

Guru Kripa Advertising Pvt. Ltd.

Outdoor Advertising Wallpaintings
All Over India

Pankaj Arcade-II, Plot no. 5, 2nd floor, Sec 11
Pocket IV, Dwarka, New Delhi-110075
Ph: 011-42770442, 011-42770443
Fax 011-28084747, 42770444 Mob.: 9810070757
email: info@gurukripaadvertising.com
www.gurukripaadvertising.com

Registered with the
Registrar of Newspaper
For India Under Number 47383/88

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0186/2013-15
Licence No. U (DN)-21/2013-14
Licenced to post without Pre-payment

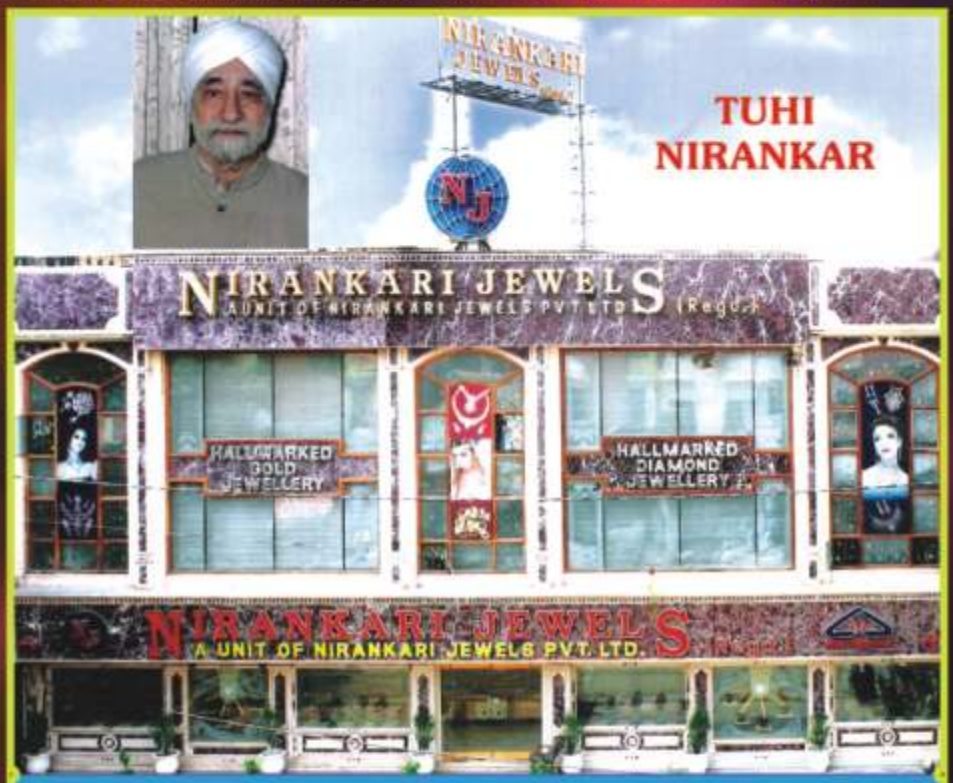

NIRANKARI JEWELS REGD.
A UNIT OF NIRANKARI JEWELS PVT. LTD.

GOVT. APPROVED VALUERS
78-84, Edward Line, Kingsway, Delhi-110009
TELE : (Showroom)
27227172, 27138079, 27244267, 42870440, 42870441, 47058133
E-mail : nirankari_jewels@hotmail.com

Posted at IMBC/1 Prescribed Dates 10th. & 11th.
Dates of Publication : 7th. & 8th. Same Month